भारत की विरासत एवं संस्कृति

- भारतीय संस्कृति में प्राचीन काल से आधुनिक काल तक कला के रूप
- साहित्य एवं वास्तुकला के मुख्य पहलू

(कला के रूप)

(1) (विरासत)

(2) कला के विविध रूप

(i) वास्तुकला / स्थापत्य कला → धर्म निरपेक्ष, → धार्मिक

(ii) शिल्पकला
- → स्तंभ कला
- → मूर्तिकला → गांधार, → मथुरा, → अमरावती
- → दस्तकारी / निर्माण
- हस्तशिल्प → वस्त्र निर्माण, → मृदभाण्ड / बर्तन

(iii) चित्रकला
- → प्रागैतिहासिक चित्रकला
- → बौद्ध, जैन चित्रकला
  - अजंता एवं बाघ गुफा की चित्रकला
- → राजपूत चित्रकला → राजस्थानी शैली (कला), → पहाड़ी (कांगड़ा, कुल्लू)
- → मधुबनी चित्र, पटना चित्रकला
  - भित्ति चित्र, अरिपन, ~~पट चित्र~~
- → मध्यकालीन चित्र० → चौर पंचाशिका शैली, → मुगल चित्रकला
- → आधुनिक चित्र० (नव बंगाल आंदोलन)
  - → ~~अविन्द्रनाथ~~ रविन्द्रनाथ टैगोर

(iv) नृत्य - संगीत
(→ शास्त्री नृत्य, लोक नृत्य

→ ध्रुपद → ख्याल
→ ठुमरी → टप्पा

V) रंगमंच → नौटंकी, जात्रा, माचा, स्वांग, मडियेट्टू, कठपुतली, कुडियट्टम etc

(VI) साहित्य- भाषा
- वैदिक साहित्य
- संगम साहित्य
- तेलगु ,,
- अन्य - उर्दू, असमी, उड़िया

(VII) धर्म / दर्शन :
- हिन्दू
- मुस्लिम
- पारसी
- सिक्ख
- ईसाई

ललितकला
- नृत्य
- संगीत
- वादन
- गायन

⇒ विचार क्रम

कला के रूप
- वास्तुकला
- मूर्तिकला
- चित्रकला
- नृत्य
- संगीत
- रंगमंच
- साहित्य

Ques कला के विविध रूप से बाँसुरी वादक तुलना –
- वास्तु
  - मंदिर (गर्भगृह) उदा –
- मूर्ति
  - (मथुरा, अमरावती)
- चित्रकला
  - राजपूताना (प)
    - किशनगढ़
    - नाथद्वारा
    - बूँदी शैली
- नृत्य - संगीत
  - कथक
  - मणिपुरी नृत्य
- रंगमंच
  - स्वांग
- साहित्य
  - ब्रज
  - अवधि

(b ......

धर्म - कला संबंध

ये दोनों साथ - साथ चलते हैं -

b(o3

- दोनों समाज में
- दोनों व्यक्ति के विचार से संबंधित
- विषय वस्तु — चित्र में, मूर्ति में

~~धर्म~~ धिक्क।

Qus :- धर्म के साथ बंधकर कला, कितनी स्वतंत्र है

- चित्रकार - मूर्तिकार धर्म से बंधे
  - जैसे
    - गणेश → लड्डू
- लेकिन धर्मनिरपेक्ष कला में स्वतंत्रता
  - Ex :- मजदरबार में अपने अनुसार रंग

⇒ कला समाज का दर्पण है :-

⇒ उत्पादन प्रणाली के परिवर्तन के साथ कला के विभिन्न रूपों में परिवर्तन आना शुरू

- i) eco. condition ↑ ⇒ भित्ति पूर्ण काम, संगमरमर
- ii) eco. condi. ↓ ⇒ सादा चित्र

⇒ कला के विभिन्न रूपों से तत्कालिक S. C. दशा का पता चलता है।

विरासत
- अर्थ
- वर्गीकरण
  - प्राकृतिक → सारी भौगोलिक चीजें
  - सांस्कृतिक
    - धार्मिक
    - धर्मनिरपेक्ष
- संरक्षण
  - कारण (क्यों विनष्ट हो रही है।)
  - उपाय
    - सरकारी
    - गैर सरकारी
      - आम समुदाय की चेतना

Qus विरासत के संरक्षण में आम आदमी की भूमिका।

(अर्थ) :- जो कुछ भी पूर्वजों से प्राप्त
+ प्रकृति / समाज ने हमें दिया
+ कई वर्षों पुरानी

लोगों - मानवों द्वारा निर्मित ⇒ सांस्कृतिक

प्रकृति से प्राप्त - ⇒

- प्राकृतिक व सांस्कृतिक विरासत में संबंध —

(1) भूगोल के अनुसार स्थापत्य का निर्माण

(2) उपजाऊ भूमि पर ही कार्य

(3) कच्चा माल

(4) पीपल का महत्व → चित्र में निर्माण

(विरासत का अर्थ)

⇒ विरा० वह है, जो हमें पूर्वजों से प्राप्त हुई है, और हमारे चारों ओर विद्यमान है, यह प्राकृतिक अथवा निर्मित है, अथवा इतिहास के साथ विकसित हुई है।

⇒ यह एक ओर किसी स्थान, क्षेत्र अथवा देश तो दूसरी ओर परिवार, समुदाय एवं लोगों की विशिष्टता एवं पहचान

है।
वर्गीकरण — विरासत को प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक विरासत में बाँटा जा सकता है।

विरासत
- प्राकृतिक
  - भूमि
  - पर्वत
  - नदी, झील
  - जंगल
  - खनिज
  - पशु-पक्षी
- सांस्कृतिक
  - मूर्त विरासत (पुरातात्विक विरा०)
    1. पवित्र स्मारक
       - स्तूप
       - चैत्य
       - विहार
       - मंदिर
       - दरगाह
       - मस्जिद
       - गिरजाघर
       - सिनेगॉग
    2. मूर्तियाँ
    3. अभिलेख
    4. मिट्टी के बर्तन
    5. महल या किले
  - अमूर्त विरासत (जीवंत विरासत)
    1. भाषा साहित्य
    2. नृत्य - संगीत
    3. रंगमंच
    4. मेले - त्योहार
    5. धार्मिक, रीति रिवाज
    6. हस्तकलाओं के रूप (रंगोली, मधुबनी) वस्त्र निर्माण
    7. चित्रकला।

Qu ?- विरासत के विभिन्न रूपों में जीवंत विरासत के संरक्षण हेतु सरकारी प्रयास।

⇒ सांस्कृतिक वि० मनुष्य की अपनी योग्यता, कौशल एवं कलात्मक प्रतिभा के बल पर की गई रचना हो सकती है, यह विभिन्न धार्मिक एवं सामाजिक परंपराओं का परिणाम हो सकती है।

प्राकृतिक विरासत ⇒
प्रा० वि० में प्राकृतिक विशेषताएं - जैसे- वन, मरुस्थल, समुद्र, मौसम पेड़-पौधे जीव- जन्तु सम्मिलित होते हैं।

ऋतुओं की विविधता, भूमि हजारों व जीव-जन्तुओं की विविधता ने देश की सांस्कृतिक परम्पराओं व विरासत के निर्माण को प्रभावित किया है। इस तरह भारतीय संस्कृति प्रकृति, पर्यावरण एवं लोगों के बीच निकट संबंधों का परिणाम है। पर्वत, नदियाँ, वृक्ष, पशु-पक्षी हमारी लोक कथाओं तथा पौराणिक कथाओं व कला के अंग रहे हैं। पंचतंत्र की पौराणिक कथाओं व जातकों में पशु-पक्षी महत्वपूर्ण चरित्र हैं। देश के विभिन्न स्थानों की लोक कथाओं में पशु-पक्षी का प्रयोग विषय-वस्तु के अर्थ व विचार को स्पष्ट करने हेतु किया गया है।

प्रकृति की शक्ति को दैवीय रूप देना हमारी परंपरा रही है, गंगा-यमुना की पूजा, पीपल व बरगद को पवित्र माना जाता है। इस तरह ये तत्व हमारी संस्कृति बन गये। भारतीय शास्त्रीय एवं लोक संगीत में प्रकृति एवं ऋतुओं के साथ गहरे संबंध देखे जा सकते हैं। संगीत की गायन शैली का संबंध ऋतुओं से है, जैसे - फाग, कजरी, चैती etc. बारहमासा चित्रमाला ऋतुओं के साथ संबंध को दर्शाती है, त्योहारों का संबंध ऋतुओं से है। हमारी चिकित्सा पद्धति जैसे - आयुर्वेद पूर्णतः प्रकृति पर ही निर्भर है। इस दृष्टि से प्राकृतिक विरासत व सांस्कृतिक विरासत के बीच घनिष्ठ संबंध देखे जा सकते हैं।

प्रकृति ने बनायी (प्रकृति) नदी ↓ इनकी पूजा ↓ (संस्कृति)

प्रकृति व संस्कृति का संबंध

Q.४ प्रकृति व संस्कृति में अटूट संबंध।

सांस्कृतिक विरासत :-

सां॰ विरा॰ मनुष्य की योग्यता एवं कलात्मक प्रतिभा के बल पर की गई रचना है, इसे दो वर्गों में बाँटा जा सकता है, -

(1) मूर्त (2) अमूर्त

मूर्त विरा॰ पुरातात्विक विरासत भी कही जाती है इसमें भौतिक वस्तुऐं, पदार्थ एवं निश्चित आकार सम्मिलित है। पुरातात्विक स्मारक एवं अवशेष हमारी सांस्कृतिक विरासत के सबसे imp. पक्ष हैं। इसमें स्मारक, भवन, किले, सिक्के, मूर्तियाँ, अभिलेख etc सम्मिलित हैं।

अमूर्त विरासत में विचारों से लेकर परंपराओं तक रहन-सहन के ढंग, व्यवहार, भाव आदि सम्मिलित हैं, इन परंपराओं, विचारों का प्रसार एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र तक होता है। इन सब से हमारी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का सुंदर, रंगीन चित्र बनता है वस्तुतः यही विशेषता हमारी संस्कृति को सामासिक बनाती है।

विभिन्न भाषाऐं - संस्कृत, पाली, प्राकृत, अपभ्रंश, तमिल, तेलगु, फारसी, उर्दू etc तथा ब्राह्मी, खरोष्ठी, अरमाइक जैसी लिपियाँ प्रचलित हैं। नृत्य-संगीत के विभिन्न रूप हस्तशिल्प निर्माण, चित्रकला इसी जीवित सांस्कृतिक विरासत के अंग हैं। वस्तुतः इन्हीं अर्थों में भारतीय संस्कृति को अनेकता में एकता कहा जाता है।

विरासत का संरक्षण :-

(i) विरासत हेतु चुनौतियाँ :- समृद्ध सांस्कृतिक विरा० को बनाए व बचाए रखना एक बड़ी चुनौती है, प्राकृतिक विरासत चाहे वह भूमि हो, या समुद्र, जंगल या मरुस्थल, वनस्पतियाँ एवं पशु-पक्षी सभी को समुचित विकास योजना के अभाव तथा निरंतर दुरुपयोग के कारण खतरा है।

भूमण्डलीकरण के कारण होने वाले तीव्र परिवर्तनों ने वि० के लिए खतरा पैदा किया।

पर्यटन में हुई अनियंत्रित वृद्धि ने भी चुनौती बढ़ायी है।

पर्यावरण के प्रति लोगों में जागरूकता का अभाव है -(Ex - प्रतिमाओं का विसर्जन)

पर्यटन के नाम पर ऐतिहासिक छेड़छाड़ एवं विरासत के प्रति अवहेलनापूर्ण रवैया ने चुनौतियाँ बढ़ायीं।

(ii) विरासत का संरक्षण क्यों आवश्यक :-

(1) हमारी विरा० राष्ट्रीय पहचान का एक दर्पण है, इ० संरक्षण जरूरी।

(2) विरासत देश एवं लोगों की पहचान को परिलक्षित करती है। व्यक्ति अपनी विरा० के साथ अपनी पहचान को जोड़ता है, जो उसे गौरव प्रदान करती है अतः गौरव की प्रेरणा का संरक्षण आवश्यक है।

(3) पारंपरिक कलाओं एवं हस्तकलाओं को बचाए रखने

सामासिक (composite) विभिन्न C. का मिश्रण

(4) विशाल पर्यटन उद्योग भी विरासत के दम पर चल रहा है। यह पर्यटकों को हमारे देश की ओर आकर्षित करती है, व लोगों को देश के एक भाग से दूसरे भाग को देखने हेतु प्रेरित करती है। इस तरह यह राष्ट्रीय एकी० के साथ-2 उस क्षेत्र के लोगों हेतु आ० लाभ भी देती है।

(iii) विरासत के संरक्षण के उपाय :-

(1) 1952 में – भारतीय वन्य जीव बोर्ड की स्थापना की गयी, यह सरकार को वन्यजीवों के संरक्षण एवं बचाव के संदर्भ में परामर्श देती है। यही क्रम में राष्ट्रीय उद्यान, पक्षी उद्यान, चिड़िया घर के निर्माण के संबंध में सलाह भी देती है।

(2) वन्य जीव Act, 1972 के तहत राष्ट्रीय उद्यानों एवं अभ्यारण्यों की स्थापना की गई है।

(3) संविधान निर्माताओं ने संवि० में संरक्षण हेतु नागरिकों का कर्तव्य को बताया। –

"हमारी सामाजिक संस्कृति की समृद्धि, विरासत का सम्मान एवं संरक्षण करे, तथा वनों, झीलों, नदियों एवं वन्य जीवों सहित पर्यावरण को बचाये व उसमें सुधार करे तथा प्राणियों हेतु करुणा का भाव रखे।"

(4) "संविधान में लिखा है, कि राष्ट्रीय महत्व के घोषित स्मारक अथवा कलात्मक या ऐतिहासिक स्थल एवं वस्तु को खराब होने, विनाश होने, हटाने, बेचने या ...

(4) पुरातात्विक विरा० को सुरक्षित रखने हेतु संसद ने प्राचीन स्मारक तथा पुरातात्विक स्थल एवं अवशेष Act, 1958 पारित किया। जिसके तहत पुरातात्विक खुदाई से निकली सामग्री एवं मूर्तियाँ आदि सामग्री की रक्षा की जायेगी। यह Act सुनिश्चित करता है, कि कोई व्यक्ति या एजेंसी सरकार की अनुमति के बिना पुरा० खुदाई नहीं कर सकता है।

(5) भारतीय निधि व्यापार Act, 1876 के तहत कहा गया, कि अचानक कोई वस्तु मिलने पर लोगों को संबंधित अधिकारियों को सूचित करना अनिवार्य है।

(6) विभिन्न संग्रहालयों की पाण्डुलिपियों एवं वस्तुओं के संरक्षक के रूप में भूमिका निभाती है।

(7) विरासत के संर० में हमारी भूमिका जो है। हम अज्ञात स्मारकों, स्थलों एवं पुरावशेषों की पहचान में सहायता कर सकते हैं। इनको सूचीबद्ध कर सकते हैं। चौकसी रख सकते हैं, ताकि स्मारक क्षतिग्रस्त ना हो और कोई चोरी ना कर सके। तथा अपने आस-पास के लोगों को जागरूकता बना सके।

(iv) <u>भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद :- (1950)</u>

भारत व दूसरे देशों के बीच सां० संबंध और अपनी सूझबूझ स्थापित करने के aim से इसकी स्थापना की गयी। इसके प्रमुख क्रियाकलाप —

(a) भारत सरकार की ओर से विदेशी छात्रों हेतु

छात्रवृत्ति स्कीमों का संचालन।

(b) भारतीय नृत्य व संगीत सीखने हेतु विदेशी छात्रों को छात्रवृत्ति प्रदान करना।

(c) विदेशों में प्रमुख सांस्कृतिक उत्सव में भागीदारी करना।

(d) विदेशों में भारत उत्सव का आयोजन करना।

(e) विदेशी विश्वविद्यालयों में भारतीय विषयों के अध्ययन की व्यवस्था करना।

(f) वार्षिक मौलाना आजाद स्मृति व्याख्यान व मौलाना आजाद निबंध प्रतियोगिता का आयोजन करना।

⇒ भारतीय पुरातत्व संरक्षण के संबंध में कर्जन के काल में 1904 में प्राचीन स्मारक तथा परिरक्षण Act पारित हुआ, जिसका उद्देश्य निजी स्वामित्व वाले प्राचीन स्मारकों के समुचित रख रखाव व मरम्मत को सुनिश्चित करना। आजादी के पश्चात भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग ने भारतीय सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण हेतु कार्य किया है।

Qu. सां० वि० के संरक्षण में एक नागरिक के कर्तव्य लिखिए।

Qu. विरासत की सुरक्षा व संरक्षण के उपायों का वर्णन कीजिए। इसका संरक्षण क्यों जरूरी है।

विरासत vs धरोहर

पवित्र स्मारक

स्थापत्य कला

- धर्म निरपेक्ष संरचना (Not so much imp)
  - महल
  - किले
  - आवास
  - नगर
- धार्मिक संरचना
  - स्तूप
    - चैत्य - विहार
  - मंदिर
    - नागर
    - बेसर
    - द्रविड़
  - (प्राचीन काल)
  - मध्यकालीन / इण्डो - इस्लामिक कला
    - मस्जिद
    - दरगाह
    - समाधि स्थल (ताजमहल)

सिंधु घाटी सभ्यता

- निर्माण से पूर्व एक layout (नक्शा)

निम्न चीजे ध्यान

- सुरक्षा
- उपलब्धता
  - जल
  - खाद्य
  - [illegible]
- [illegible]

- ग्रामीण / शहरी का उत्थान → बसावट → [illegible]
  - [illegible] → [illegible]
- नगर को चार दिवारों से घेरा
  - bcoz
    - आक्रमण की समस्या
    - सुरक्षा
- नगर निर्माण के दो भाग
  - [illegible] वर्ग
  - सामान्य वर्ग

कुलीन — सामान्य

[illegible] [illegible]

शहर की backdoor entry bcoz
- सुरक्षा
- स्वास्थ्य (bcoz गुप्त [illegible] [illegible])

खिड़कियाँ [illegible] के [illegible]

स्तूप :-

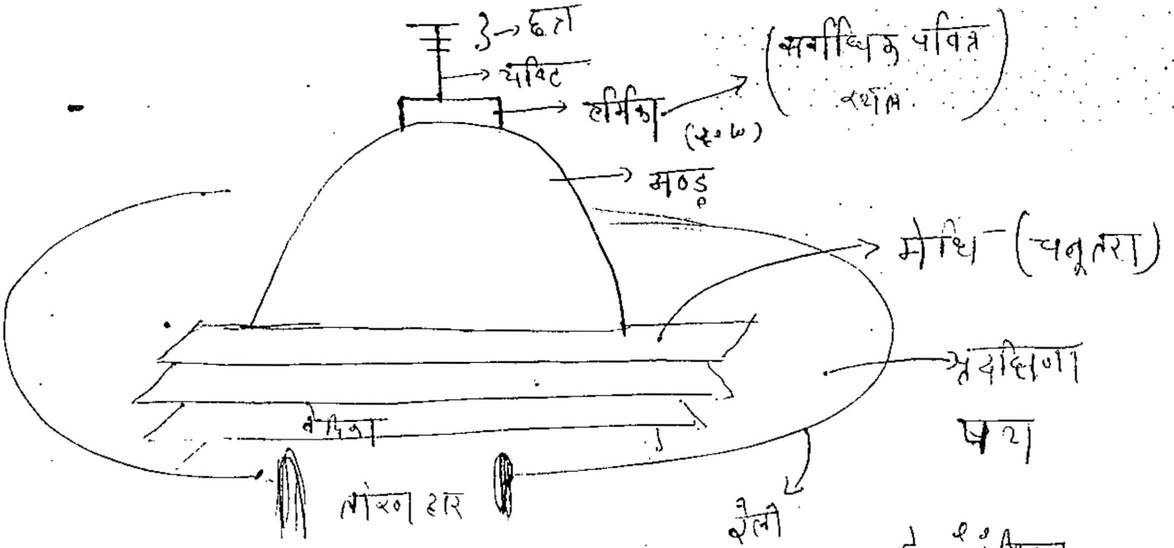

(स्तूप)

(अभी तो सुनिश्चित २०७. में यह भी बताना है, कि किस का पार्ट है?)

स्तूप :- अर्थ, विशेषताएँ, प्रकार, प्रमुख उदाहरण

अर्थ :- पाली में S का अर्थ है, थूप अर्थात् एक ऊँचा स्थान S एक धार्मिक संरचना है, जो मुख्यतः बौद्ध धर्म से संबंधित है, इसमें बुद्ध के अवशेष रखे होते थे।

विशेषताएँ :- S एक अर्द्ध गोलाकार संरचना है, जो मेधि के ऊपर एक उल्टे कटोरे की भाँति ~~रखी होती है~~, जिसे अण्ड कहा जाता है। इसके शीर्ष पर एक हर्मिका नामक संरचना होती है, जहाँ बुद्ध या उनके किसी शिष्य के अवशेष रखे जाते हैं। यह स्तूप का सर्वाधिक पवित्र भाग होता है, इसे देवताओं का निवास स्थान माना जाता है। इस हर्मिका के बीचों बीच एक यष्टि लगी होती है, और इसके शीर्ष पर छत्र होते हैं, ये सामान्यतः तीन होते हैं जो क्रमशः सम्मान श्रद्धा और

उदारता के प्रतीक है। S. में चारों ओर घूमने हेतु एक प्रदक्षिणा पथ होता है, तथा यह पूरी संरचना एक वेदिका से घिरी होती है। S. प्रायः ईंट या पत्थर के बने होते थे। मौर्योत्तर काल में S में अलंकरण का प्रयोग भी होने लगा, और उसके तोरण द्वार पर चित्र एवं नक्काशी का अंकन होने लगा।

Note
... 20 w.
... ?
... ?

स्तूप के प्रकार :-

(बुद्ध / शिष्य)

(1) शारीरिक S :- इसमें बुद्ध के एवं उनके प्रमुख शिष्यों की अस्थियाँ एवं अंग रखे जाते थे, जैसे - दाँत, केश etc

(2) पारिभोगिक S :- इसमें बु. द्वारा उपयोग में लायी गयी वस्तुएँ जैसे - भिक्षा पात्र, चरण पादुका etc रखे जाते थे।

(3) उद्देशिका S :- इसके तहत वे S. आते हैं, जिन्हें बुद्ध के जीवन की घटनाओं से संबंधित अथवा उनकी यात्रा से पवित्र हुए स्थानों पर स्मृति के रूप में बनवाया जाता था, जैसे - सारनाथ, कुशीनगर, बोध गया के स्तूप।

(4) संकल्पित S :- इस प्रकार के S. को बौद्ध तीर्थ स्थलों पर श्रद्धालुओं द्वारा निर्मित कराया जाता था, ये S. आकार में छोटे होते थे।

प्रमुख उदा :-

(1) सारनाथ एवं साँची में अशोक द्वारा बनवाया गया S. तथा तक्षशिला में धर्मराजिका S.

(2) मौर्योत्तर काल में शुंग शासन में भरहुत S. में वेदिका का निर्माण करवाया गया।

(3) नागार्जुनीकोण्डा (A.P.) का निर्माण इक्ष्वाकु शासकों के द्वारा बनवाया गया। यहाँ विशेष प्रकार के चबूतरों ("आयकों") ~~नाम से जाने जाते हैं~~ का निर्माण किया गया है।

Note
Ques => साँची स्तूप (200 words
का format है—
- स्तूप का General intro
- साँची + स्तूप को relate करके लिखें

चैत्य

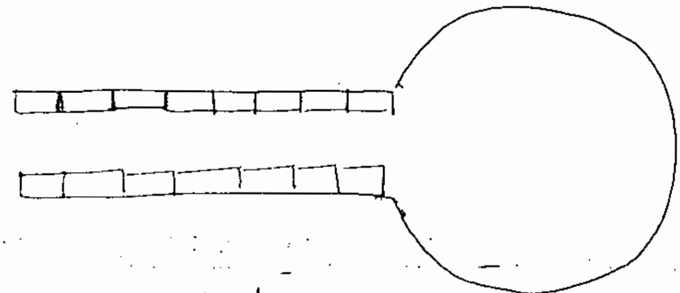

(चैत्य)

Note →
भारतीय कला
सुन्दर + तकनीकी

- चैत्य एक धार्मिक स्थापत्य का अंग है, यह बौद्ध व जैन धर्म से संबंधित एक पूजागृह है।
- यह पहाड़ियों को काटकर बनाया जाता था, यह एक आयताकार हाल होता है, जिसका अंतिम सिरा अर्द्धवृत्ताकार होता है।
- महाराष्ट्र स्थित कार्ले का चैत्य सबसे बड़ा है यहाँ के स्तंभ अत्यंत दर्शनीय हैं।

धार्मिक विरासत के सांस्कृतिक विरासत का हस्तांतरण।

विहार

starting में पहाड़ों पर => फिर जंगलों में

- भिक्षुओं के निवास हेतु पहाड़ियों को काटकर बनायी गयी गुफा को विहार कहा जाता है।
- उड़ीसा के शासक खारवेल के द्वारा उदयगिरि पहाड़ी पर बनवाया गया, विहार प्रसिद्ध है, तो प॰ भारत में भजा, कार्ले, नासिक में प्रमुख विहार बने हैं।

गुफा स्थापत्य → गुफाओं को काटकर निर्मित संरचना

↳ उदा० → चैत्य
→ विहार

° धार्मिक संरचना

~ अशोक द्वारा आजीवक हेतु निर्मित

गुप्तकाल में विकास . मंदिर / प्रारंभ में ब्राह्मण — बाद में बौद्ध, जैन

↓ क्यों बने

↳ तत्कालीन युग की विशेषता

↳ धार्मिक अवधारणा →

भावित → मूर्ति निर्माण (मौर्योत्तर काल) ⇒ अब इनके लिए देवालयों की जरूरत ⇒ अतः गुप्तकाल में मंदिर प्रकट

⇒ गुप्तकाल के स्थापत्य — कलागत विशेषता / रचनात्मकता

› हिन्दू आधार पर विभाजन — नागर, बेसर, द्रविड़

N vs › मंदिर

• • स्थाप विशाल नहीं · है

ऊँची कलात्मकता · भिन्न

अंतर का कारण

(i) N में वर्ण व्यवस्था → ब्राह्मण की भूमिका केवल धार्मिक स्तर पर

(ii) S. में ... → आधार ↑ → ... का सामान्य

(iii) दान की उच्च परंपरा in South

↳ ...

↳ iv → ब्राह्मणों ने धन से धन कमाया

(आर्थिक (मंदिर आ० गतिविधियों में

involve.

⇓

अब सुरक्षा।

⇓

दिवार → प्रवेश हेतु द्वार ⇒ गोपुरम / प्रवेश द्वार का निर्माण

N में

no boundary

(v) S. में ज्यादा अलंकरण

(vi) अंतर का कारण → आवश्यकता

S में विशाल सभा भवन की उपस्थिति

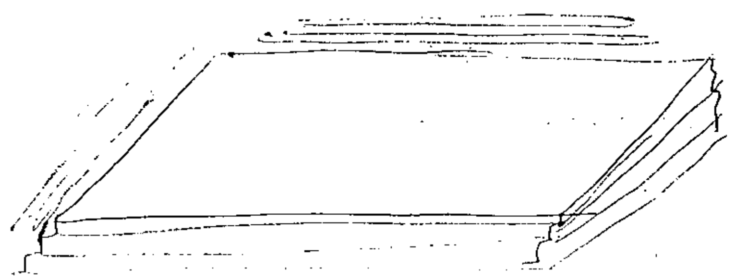

प्रवेश → सीढ़ियां → सभा भवन ⇒ जहाँ देवता स्थापित

N S ⇓

⇓ वह स्थान

में बड़ा — — गर्भगृह

⇓ ↳ इसके ऊपरी भाग

अब बड़ा आकार — शिखर

कल्याण मण्डप ↳ पहले सपाट बाद में ऊँचा उठा हुआ

↳ सभा भवन में काफी बड़ी संख्या में स्तंभ

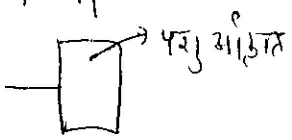

मंदिर स्थापत्य के अंग :-

1) अधिष्ठान :- यह चबूतरे नुमा संरचना होती है, जिसे आधार बनाकर मंदिरों का निर्माण किया जाता है। नागर शैली में अधिष्ठान एक आवश्यक तत्व है, जबकि द्रविड़ एवं वेसर शैली में अधिष्ठान आवश्यक नहीं।

२) गर्भगृह :- यह मंदिर का सर्वाधिक मुख्य भाग होता है, जिसमें देवता की मूर्ति की स्थापना की जाती है। नागर शैली में गर्भगृह वर्गाकार होता है, जबकि द्रविड़ शैली में आयताकार होता है। त्रिकोण

(3) शिखर :- गर्भगृह के ऊपर की विशाल निर्मित संरचना को शिखर कहा जाता है, नागर शैली में रेखिय शिखर होते थे, जबकि द्रविड़ में पिरामिड नुमा शिखर होते हैं और ये अत्यंत विशाल होते थे। द्रविड़ शैली के शिखर के शीर्ष पर स्तूपिका होती थी, जबकि नागर शैली के शीर्ष पर "आमलक" की संरचना होती थी।

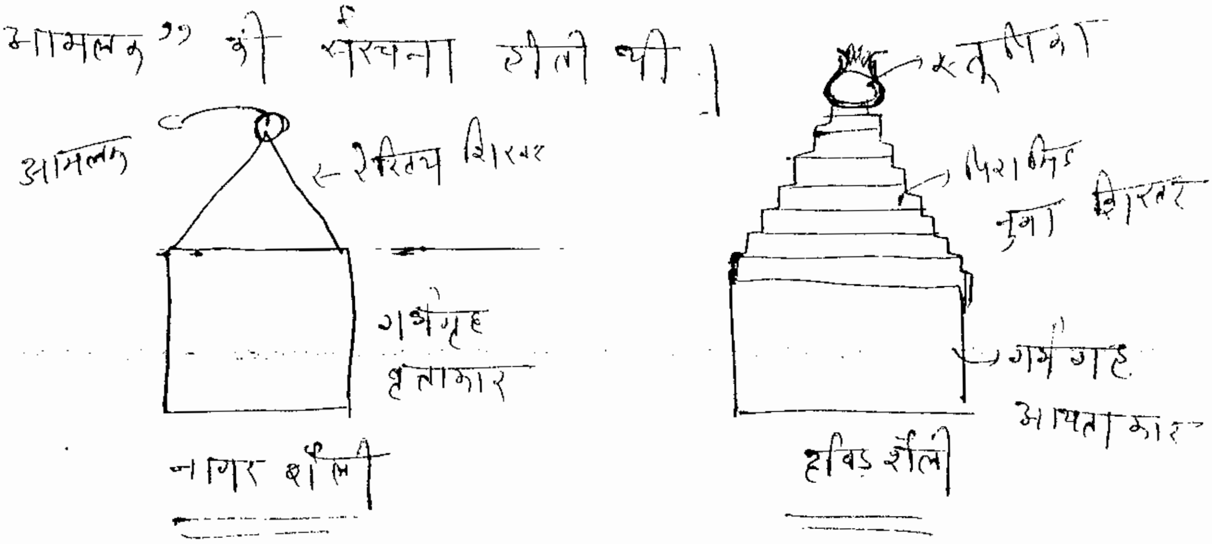

(५) गोपुरम :- यह मंदिर का प्रवेश द्वार होता था, जो द्रविड़ शैली का एक प्रमुख अंग होता है, कभी कभी गोपुरम को

की यह विशालता तत्कालिक राज्य की आर्थिक- राजनीतिक समृद्धि को दर्शाती है।

(5) परकोटा / wall :- द्रविड़ मंदिरों में गोपुरम बनाये जाने का एक imp. कारण उसका परकोटा / दीवार से घिरा होना था, नागर शैली के मंदिरों में यह प्रायः नहीं पाया जाता।

(Ques :- मंदिर तत्वों के आधार पर मंदिर वास्तुकला शैलियों का तुलनात्मक विवरण कीजिए।)

Or

Ques मंदिर वास्तुकला शैली के तत्व बतायें।

Q. word => गोपुरम :
क्या है, + विशिष्ट बात

मंदिर निर्माण शैली

	नागर शैली	द्रविड़	बेसर
क्षेत्र	हिमालय से विंध्य पर्वत तक विस्तृत प्रदेश	कृष्णा से कन्याकुमारी तक	विंध्य से कृष्णा।
तत्व	(1) इसमें मंदिर चतुष्कोणीय होते थे, गर्भगृह => वर्गाकार होता था, तथा इसके ऊपर रेखीय शिखर तथा उसका शीर्ष आमलक (गोलाकार) होता था। (2) मंदिर में सभाभवन (मण्डप) तथा प्रदक्षिणा पथ भी होता था।	- इसमें मंदिर प्रायः अष्ट कोणीय संरचना से युक्त होते थे। - गर्भगृह आयताकार होता था। - शिखर पिरामिड के आकार का तथा इसके शीर्ष पर स्तूप के समान संरचना होती थी। यहाँ प्रवेश हेतु गोपुरम एक उल्लेखनीय विशेषता है।	- मंदिर निर्माण की यह शैली में नागर तथा द्रविड़ का मिश्रित रूप - इसमें प्रायः द्रविड़ शैली के मण्डप एवं शिखर को शामिल किया गया, तो नागर शैली के आमलक को, इस शैली का प्रमुख उदाहरण

होयसल शासकों के द्वारा मैसूर के हेलबिड नामक स्थान पर बनाया गया ~~होयसलेश्वर~~ होयसलेश्वर मंदिर।

Note → कोई भी मंदिर आयें, तो मंदिर + शैली की General बात

उसके में क्षेत्रीय स्तर पर भी भिन्नता पायी जाती है

(इसका संदर्भ लिखा है)

Que भारतीय कला संस्कृति में गोपुरम युक्त मंदिर अपनी भव्यता के साथ अक्षुण्ण विरासत है

मंदिर वास्तुकला —

(1) अर्थ
(2) परिचय
(3) द्रविड़ कला की विशेषता
(4) प्रमुख उदाहरण
(5) ...

क्षेत्रीय मंदिर कला शैली :-

(1) उड़ीसा मंदिर समूह :- यहाँ के मंदिर शुद्ध नागर शैली का प्रतिनिधित्व करते हैं। (नागर शैली की विशेषता लिखनी है।) यहाँ मंदिरों में क्षेत्रीय विशेषतायें मौजूद हैं

- भोग मंडप सभा भवन — मंडप (सभा भवन)
- देवल / देउल —→ गर्भगृह
- मस्तक → आमलक
- गण्डी → शिखर
- पिढ़ → अधिष्ठान

इसके प्रमुख मंदिर = कोणार्क का

सूर्य मंदिर, पुरी का जगन्नाथ मंदिर

(२) खजुराहो मंदिर समूह :
- यह मध्य प्रदेश, बुंदेलखण्ड, छतरपुर में स्थित है
- चंदेल शासकों के द्वारा नागर शैली के अंतर्गत मंदिरों का निर्माण किया गया है। ये मंदिर शैव, वैष्णव एवं जैन धर्म से संबंधित है, ∴ फर्ग्युसन ने कहा, कि

"खजुराहो के मंदिर साम्प्रदायिक सौहार्द की भावना से निर्मित हुए है।"

प्रमुख विशेषताएँ :-

(1) इनका निर्माण खुले स्थान पर हुआ है, इनके चारों ओर कोई दिवार नहीं

(२) एक ऊँचे अधिष्ठान पर बनाया गया है, यहाँ भव्य शिखर एवं जालीदार खिड़कियों का निर्माण हुआ है। शिखर के ऊपर गोल आमलक की संरचना मिलती है।

(3) मंदिर के प्रवेशद्वार को सजाया गया है, कुछ मंदिर ~~पंचायतन~~ पंचायतन शैली के मिलते है, अर्थात देवताओं का पांच समूह मिलता है

(४) प्रमुख मंदिर :- कंदरिया महादेव का मंदिर, लक्ष्मण मंदिर, पार्श्वनाथ मंदिर

(5) खजुराहो के मंदिर मूर्तिकला का उत्कृष्ट उदाहरण है, ये मूर्तियाँ भारतीय आध्यात्मिक भावनाओं की सजीवता को प्रस्तुत करती है, वस्तुतः यह भारतीय दर्शन में धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की अवधारणा को प्रस्तुत करती है

तत्कालीन सामंती समाज की स्थिति

(3) गुजरात - राजस्थान मंदिर समूह :-

↳ इस समूह के मंदिर भी नागर शैली से संबंधित है, आबू पर्वत के पास दिलवाड़ा जैन मंदिर, स्थानीय विशेषताओं को शामिल करता है। यह मंदिर संगमरमर के प्रयोग से युक्त है, और यहाँ बारीक नक्काशी मिलती है, मंदिर के प्रवेश द्वार पर गर्भगृह का अंकन इसकी खास विशेषता है, इसी तरह गुजरात में पाटन स्थित संगमरमर का बना मंदिर नागर शैली से युक्त है।

(बाएँ हाशिए में: इस नागर मंदिर कला की ये विशेषता यहाँ - वहाँ ज्यादा होती है)

द्रविड़ कला शैली

→ पल्लव कला :- (550 से 750 ई॰)

↳ यह द्रविड़ कला शैली का प्रति॰

↳ इसकी कुछ विशिष्ट विशेषताएं

पल्लव
↓
चोल (पल्लव कला का विस्तारित रूप)

- शासकों के नाम पर मंदिर कला शैली का विकास हुआ :-

(बाएँ हाशिए में: शासनकाल मजबूत ⇓ अलंकरण ↑)

महेन्द्रवर्मन	----->	मंडप	(काफी सादे होते है)
नरसिंहवर्मन (मामल्ल शैली)	----->	मंडप →	(रथ मंदिर) ⇓ पहाड़ियों को काटकर (Rock Cut temple) मोनोलिथिक

↓

सात पगोड़ा

- पल्लव कला मंदिर स्थापत्य की द्रविड़ शैली से संबंधित है।
- पहाड़ियों को काटकर मंदिर निर्माण की नई शैली चलाने वाले वस्तुतः पल्लवों ने वास्तुकला को काष्ठकला रूप से मुक्त किया।
- पल्लव कला की विशिष्ट शैली :-

(1) महेन्द्रवर्मन शैली :- मुख्य रूप से इसमें मण्डप संरचना मिलती है, जो चट्टानों को काटकर बनायी गयी, ये मंदिर स्तम्भपूर्ण होते थे।

(2) नरसिंहवर्मन शै० (मामल्ल शैली) :- इस शैली में मण्डप के साथ-साथ रथ का निर्माण किया गया, ये रथ मंदिर एकाश्मक हैं अर्थात् रथ मंदिर चट्टानों को काटकर बनाये गये हैं। रथ मंदिरों को सामूहिक रूप से सप्त पगोडा कहा जाता है। इसमें शामिल हैं :- धर्मराज रथ (सबसे बड़ा), अर्जुन रथ, भीमरथ, द्रौपदी रथ (लघुतम)। ये रथमंदिर मूर्तिकला हेतु भी प्रसिद्ध हैं, अर्थात् रथों पर बने हुए देवता तथा राजा की प्रतिमा मूर्ति कला का उत्कृष्ट रूप है। इस शैली का प्रमुख केन्द्र महाबलिपुरम् है।

पल्लव कला (50)
/ मंदिर
द्रविड़
/ वर्गीकरण
/ रथ मंदिर
धार्मिक अलंकरण
मिश्रित शैली

(3) राजसिंह शैली :- इस शैली के मंदिर ईंट एवं पत्थरों के माध्यम से बनाने लगे, अर्थात् इमारती मंदिर बनने लगे जैसे काँची का कैलाशनाथ मंदिर, महाबलिपुरम् का समुद्र तटीय मंदिर

(4) नंदिवर्मन शै० :- इसमें मंदिर आकार में छोटे बनने लगे, जो पल्लवों के राजनीतिक आर्थिक पराभव को सूचित करता है।

राष्ट्रकूट कला :-

राष्ट्रकूट शासक कृष्ण प्रथम ने एलोरा में कैलाश नाथ मंदिर का निर्माण करवाया, इसमें द्रविड़ शैली के विमान व गोपुरम् उल्लेखनीय हैं, इस मंदिर की खास विशेषता यह है कि इसे बनाने हेतु पहाड़ी को ऊपर से नीचे की ओर काटते हुए कार्य किया गया है,

Shows
⇓
layout पहले ही तैयार है
+
उच्च तकनीक

(चोल कला) :- यह द्रविड़ शैली को प्रतिनिधित्व करती है।
चोलों ने 10वीं व 11वीं सदी में दक्षिण भारत में एक विशाल साम्राज्य का निर्माण किया, तथा इसी विशालता का दर्शन इनके स्थापत्यकला में दिखाई पड़ता है। [illegible]

→ इन मंदिरों में पिरामिड्नुमा शिखर, विशाल - भव्य गोपुरम् व पूरा मंदिर एक परकोटे से घिरा होता है।

→ प्रमुख मंदिर हैं :-

1) राजराज I → तंजौर का बृहदेश्वर मंदिर

2) राजेन्द्र I → गंगईकोण्ड चोलपुरम का बृहदेश्वर मंदिर

इन मंदिरों के संदर्भ में फर्ग्युसन ने कहा, कि "चोल कलाकार राक्षस की तरह सोचते हैं, व जौहरी की तरह तराशते हैं।"
⇓
विशाल आकार के कारण।

(इण्डो - इस्लामिक कला) :-> [illegible]

- विशेषताएं
- दिल्ली सल्तनत में विकास
- मुगल काल
- क्षेत्रीय राज्यों में कला
  - बंगाल
  - जौनपुर
  - मालवा

विशेषताएं :-

(1) त्राबियत एवं अरकुएट शैली
(2) डाटकरण
(3) गुंबद व मेहराब

(त्राबियत) :- बल्ली व शहतीर के माध्यम से निर्माण कार्य

(अरकुएट) :- मेहराब + गुंबद

इण्डो-इस्लामिक शैली (वास्तुकला) — त्राबियत + आरकुएट का सुंदर समन्वय

अलंकरण - फूल, पत्ति व पशु पक्षी के चित्रों का use

कुरान की पंक्तियां (आयतें) => सूफी

आयतें + फूल पत्ति का अंकन => अरबस्क

बड़े सभाभवन की जरूरत => पिलर समस्या

↳ मेहराब + गुंबद का विकास

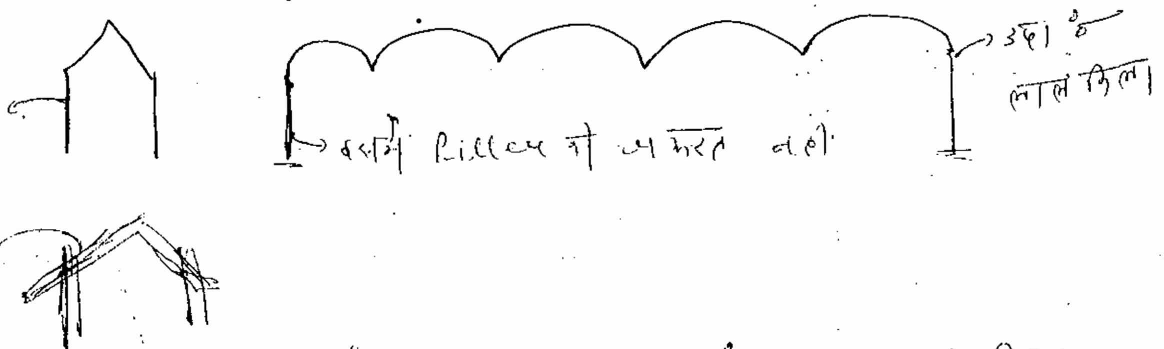

मेहराब + गुंबद तुर्कों द्वारा introduce किया
basically रोम से सीखे

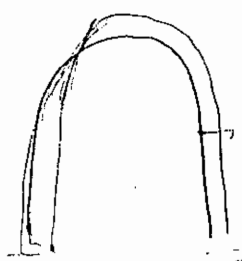

इण्डो-इस्लामिक → धार्मिक + धर्म निरपेक्ष

↳ उन वास्तुकला तरीकों से है, जो धर्म से संबंधित नहीं

जैसे उदा० है

इण्डो-इस्लामिक स्थापत्य :-

- यह कला भारतीय त्राबियत शैली तथा इस्लामिक आरकुएट शैली का सुंदर समन्वय है।
- भवन निर्माण सामग्री पत्थरों का खूब प्रयोग किया गया है, और इन्हें आपस में जोड़ने हेतु चूना पत्थर, गारा, जिप्सम का

प्रयोग किया गया है। गुंबद एवं मेहराब की संरचना ने भवनों के विशाल सभाभवन के निर्माण को सहज बना दिया। वस्तुतः गुंबद एवं मेहराब ने छतों को सहारा देने हेतु स्तंभों की अनिवार्यता को समाप्त किया। चूँकि इस्लाम में प्राणियों के चित्रण को मान्यता नहीं थी, अतः सजावट में विभिन्न ज्यामितिय प्रतीकों व फूल-पत्तियों का अलंकरण किया गया, जो धर्म निरपेक्ष पहलु को उजागर करता है।

– इस्लामिक शैली में अलंकरण हेतु अरबस्क उल्लेखनीय है, जिसके तहत कुरान की पंक्तियों को फूल पत्तियों के साथ दिवारों पर लिखा जाता है। इस अलंकरण में कमल एवं घण्टे का भी प्रयोग होता था, जो अन्य धर्म से भी जुड़े माने जाते हैं, इस तरह इस्लामिक स्थापत्य के अलंकरण में धार्मिक एवं धर्म-निरपेक्ष पहलू शामिल हैं।

मस्जिद की प्रमुख शब्दावली :

1) लिवान :- मस्जिद के स्तंभों वाले कमरे को लिवान कहते हैं।

2) किबला :- यह मस्जिद या नमाज पढ़ने के हाल की दिवार है, जो हमेशा मक्के के काबा की दिशा में होता है। (पश्चिम)

3) मक्सुरा :- मस्जिद के किबला के आखिरी सिरे को मक्सुरा कहते हैं, एक रेलिंग के द्वारा इस भाग को अलग कर दिया जाता है, इसका प्रयोग शाही व्यक्तियों व मौलवियों द्वारा किया जाता है।

(4) सहन :- यह मस्जिद का आंगन है, जहाँ धार्मिक अनुयायी एकत्रित होते हैं,

दिल्ली सल्तनत में विकास :-

→ इल्बारी काल :- (1206 – 1290) :-

इस काल में कुतुबद्दीन ऐबक ने कुतुबमीनार का निर्माण करवाया, जो शंकु के आकार का है, और इसमें बने छज्जे स्टैलेक्टाइट हनी कोम्बिंग तकनीक को मीनार के मूल ढांचे से जुड़े हुए।

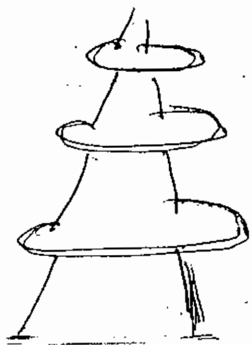

→ खिलजी वंश :-

अलाउद्दीन खिलजी ने अलाई दरवाजे का निर्माण करवाया। इसमें घोड़े के नाल के आकार की मेहराब मिलती है, जिस पर कमल की कली की तरह की झालर मौजूद है। जो मार्शल ने इस्लामिक स्थापत्य कला के खजाने का सबसे बड़ा हीरा था।

→ तुगलक काल :- यहाँ भवन निर्माण में खुरदुरे पत्थर एवं ढालू दीवारों (सलामी) का निर्माण हुआ है, जो तुगलक स्थापत्य की खास विशेषता है, यह सलामी भवनों को मजबूती प्रदान करती थी। ग्यासुद्दीन के तुगलकाबाद के किले में इसका उत्कृष्ट रूप देखा जा सकता है।

→ सैय्यद एवं लोदी काल :- इस काल में मकबरों का अत्यधिक निर्माण हुआ, इन भवनों को बाग के मध्य चबूतरे पर बनाया गया। इसे चारबाग शैली कहते हैं। आगे चलकर यह मुगलों की स्थापत्य कला का अभिन्न अंग बन गया।

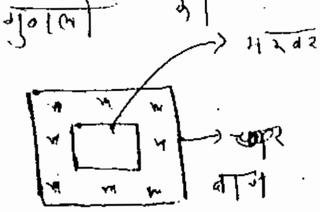

क्षेत्रिय शैलियाँ / प्रांतीय स्थापत्य कला की शैली

→ बंगाल स्थापत्य की खास विशेषता यह है, कि इसमें मुख्यतः ईटों का प्रयोग हुआ है, और मेहराब नुकिलें बनाये गये है, साथ ही मुड़े हुए छज्जों का प्रयोग किया गया। प्रमुख उदा :- अदीना मस्जिद, बड़ा सोना मस्जिद

→ जौनपुर (शर्की शैली) :- जौनपुर में शर्की वंश की स्थापना हुई तथा शर्कियों ने इसे वास्तुकला, शिक्षा एवं साहित्य का केन्द्र बना दिया। इसी संदर्भ में इसे पूर्व की "शिराज" कहा जाता है।

(ईरानी नगर)

शर्की शैली में मुख्यतः ढलवा दिवारें, वर्गाकार स्तंभ, छायादार रास्ते निर्माण के मुख्य अंग हैं। प्रवेश द्वार की विशालता तथा उसकी सजावट शर्की शैली की खास विशेषतायें हैं, जो किसी अन्य इस्लामिक स्थापत्य में नहीं मिलती जैसे - अटाला मस्जिद, झंझरी मस्जिद। (तुगलक स्थापत्य का प्रभाव यहाँ दिखायी पड़ता है।)

Imp द्वार — द्वार अंदर धकेला गया।

→ मालवा स्थापत्य कला :- यहां पर तुगलककालिन वास्तुकला की विशेषता मिलती है, यहाँ के वास्तुकला की खास विशेषता धरातल से प्रवेश द्वार तक बनी भव्य एवं चौड़ी सीढ़ियाँ हैं। भवनों में रंगीन पत्थर का प्रयोग किया जाता है। जैसे - माण्डु का किला, जहाज महल, अशर्फी महल।

ref — सीढ़ी अश्फलियों

— विजयनगर स्थापत्य :-

दिल्ली सल्तनत से स्वतंत्र हुए विजयनगर राज्य की स्थापना 1336 में हरिहर व बुक्का ने की थी, यहाँ के मंदिर कला की द्रविड़ शैली का प्रतिनिधित्व करते हैं। यहाँ के स्थापत्य की खास विशेषता हजार स्तंभों वाले भवन व विशालकाय कल्याणमण्डप है, जहाँ विवाह भी आयोजित होता था।

only for विजय० नगर हेतु

मुगल स्थापत्य कला

इण्डो - इस्लामी कला

ट्राबियत (बल्ली + शहतीर) — अलंकरण — बेल-बूटे

अरकुएट (मेहराब + गुंबद) + मेहराब + गुम्बद — फूल-पत्ती + अरब में कुरान की

पित्राडुरा →

विशेषता :→ मुगल स्थापत्य कला में इण्डो-इस्लामिक शैली का (ट्राबियत + अरकुएट) सुंदर समन्वय मिलता है, तो साथ ही राजपूत, बौद्ध, जैन, ईरानी शैलियों के तत्व भी मिलते हैं। भवनों में अधिकांशतः बलुआ पत्थर का प्रयोग किया गया है, संगमरमर पर बहुमूल्य पत्थरों, हीरों, जवाहरातों आदि को जड़ी लगाकर पित्राडुरा कहलाती है। यह स्थापत्य में सजावट का साधन है। सर्वप्रथम इस शैली का प्रयोग एतमादुद्दौला के मकबरे आगरा में दिखायी देता है।

इस काल में चारबाग शैली एवं दोहरे गुंबदों का प्रयोग आरम्भ प्रचलित हुआ।

अकबर के काल में आगरा एवं फतेहपुर सीकरी में अनेक भवनों का निर्माण हुआ। फतेहपुर सीकरी में बना पंचमहल बौद्ध स्थापत्य से प्रभावित है।

शाहजहाँ का काल मु० स्था० का स्वर्ण काल माना जाता है। इस काल में संगमरमर का प्रयोग व्यापक रूप से किया गया तथा बहुस्तरीय मेहराब का प्रयोग हुआ जैसे- लाल किला बने भवन आदि।

ताजमहल
Succite
about
कला

का प्रयोग हुआ है। गुंबद

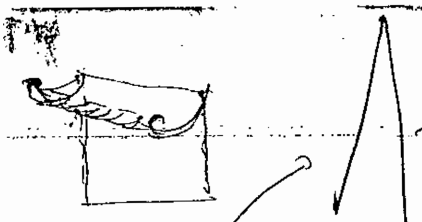

गिरजाघर :- यह स्थापत्य की गोथिक शैली के तहत बने है, जिसमें ऊँची मीनारें व स्तंभों के अंदर मानव आकृतियां मौजूद है।

(युग - 2)
(यूरोपीय स्थापत्य शैली
- पुर्तगालियों द्वारा
भारत में प्रवेश)

पलपिट :- यह गिरजाघर में ऐसा ऊँचा स्थान है, जहाँ से पुजारी प्रार्थना करने वालों को संबोधित करता है।

नेव :- यह गिरजाघर का एक लम्बा भीतरी भाग है, जिसके दोनों तरफ से गलियारा होता है।

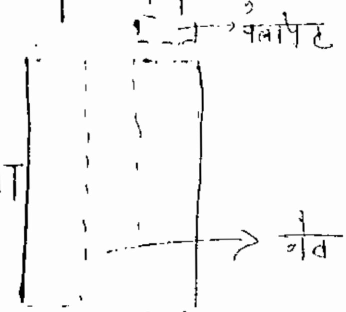

आइल :- यह गिरजाघर में दिवार तथा बैठने के स्थान के बीच की एक खाली जगह है।

भारत में पहला गिरजाघर 1510 ई० में केरल, कोच्चि में बनाया गया।

अगियारी / अग्नि मंदिर :-

- पारसी धर्म का पवित्र स्मारक अगियारी, यह अग्नि मंदिर के नाम से जाना जाता है। पार० के यहां ,, का धार्मिक व आध्यात्मिक महत्व है।

सिनेगॉग :-

यह यहूदियों का पूजा स्थल है, भारत में केरल में सिनेगॉग का निर्माण मिलता है।

शिल्पकला

1) **स्तंभ कला :-**

- अशोक के स्तंभ

मोनोलिथिक

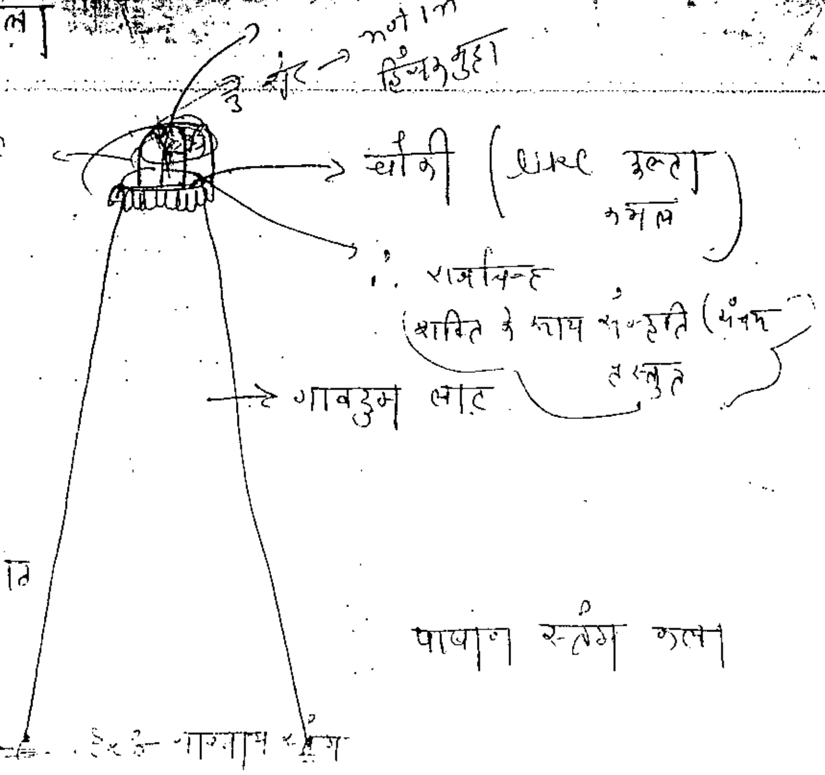

विवाद ईरानी कला का प्रभाव

N.C.

1) ईरानी का प्लेटफॉर्म (A) — ईरान आधार स्तंभ
2) यवनों के साथ व्यापार स्वतंत्रता
3) एकाश्मक पत्थर नहीं

पाषाण स्तंभ कला

1) यह शक्ति व संयम का मिश्रण प्रस्तुत

विदेश नीति — !! भारत no first use की policy

मौर्यकालीन स्तंभ राजकीय कला का नमूना है, ये स्तंभ चुनार के बलुआ पत्थर से बनाये गये हैं, तथा एकाश्मक हैं। ये स्तंभ बिना किसी सहारे के खुले आकाश के नीचे खड़े हैं, इनकी लंबाई 30-50 फीट व वजन लगभग 50 टन तक है।

संरचना :-

स्तंभ के दो भाग हैं -

1) शीर्ष : जिस पर किसी पशु की आकृति है।
2) गावदुम लाट

स्तंभ का आधार मोटा होता था, जो क्रमशः ऊपर जाते हुए पतला होता गया। स्तंभ के शीर्ष पर एक चौकी या घण्टे की आकृति होती थी। जिसे 'अलौकिककमल' कहते हैं। ... चौकी पर पशुओं की ...

आकृति होती थी। इस स्तंभ का ऐतिहासिक अर्थ अत्यंत imp है, क्योंकि यहाँ के शीर्ष चिन्ह को भारत का राजचिन्ह बनाया गया। वस्तुतः यहाँ मौजूद चार सिंह शक्ति का प्रतीक है, जो अहिंसक मुद्रा में यह शक्ति एवं सौम्यता के भाव को व्यक्त करता है। यही भारतीय संस्कृति का मूल भाव है। यह भारत की विदेशी नीति को भी संकेतित करता है, जो शक्ति संपन्न होते हुए भी संयम से युक्त है, इस तरह भारतीय संस्कृति की निरंतरता इस राजचिन्ह के माध्यम से आज भी विद्यमान है।

हेलियोडोरस का गरुड़ स्तंभ :-

शुंग शासक भागभद्र के समय में विदिशा दरबार में यवन राजदूत हेलियोडोरस ने भागवत धर्म के सम्मान में गरुड़ स्तंभ की स्थापना की।

— — —

II) मूर्तिकला

मौर्योत्तर काल → सगुण भक्ति का रूप
⇓
मूर्ति निर्माण की परंपरा
शुरू

इस समय भारत में विदेशी भी आए।

कला

- हैलेनिक कला
⇓
यूनान की कला
- हेलिनिस्टिक कला :- यूनानी कला + स्थानीय क्षेत्र की कला

मूर्तिकला

गंधार कला
- हेलिनिस्टिक Art का नमूना
⇓
यूनानी + भारतीय कला
विषयवस्तु भारतीय
(i) बुद्ध
शिल्प वेशभूषा, बाल
बनाने का ढंग यूनानी
ढंग में
- उदा० :- बुद्ध की मूर्तियाँ

मथुरा
- यथार्थवादी का आदर्शवादी आधार।
- लाल बलुआ पत्थर
- पूर्णतः भारतीय

अमरावती कला
- 4th C. B.C.
- अलंकरण का ज्यादा से ज्यादा महत्व
- मूर्तिकार की कलाकारी ओरते पर ही
- संगमरमर का प्रयोग

- गंधार कला को यथार्थवादी माना जाता है।
शारीरिक अंगों, भाव आदि का यथार्थवादी चित्रण
- विदेशी प्रभाव
- उ० प० क्षेत्र में मौजूद है।

गांधार कला :-

- गां॰ मूर्तिकला शैली यथार्थवादी कहलाती है, इसमें मानव शैली का यथार्थ चित्रण किया गया है, शारीरिक रूप रेखा के अंकन पर विशेष ध्यान दिया गया है, व बालों की संरचना को भी दर्शाया गया है।
- बुद्ध की मूर्तियाँ बैठी हुई, लेटी तथा खड़ी अवस्था में दिखाई देती हैं।
- मूर्तियों का निर्माण नीले-भूरे पत्थरों के माध्यम से किया गया है। इस कला के मुख्य संरक्षक — शक तथा कुषाण रहे हैं।
- मुख्य केन्द्र तक्षशिला, बामियान हैं।

गंधार कला पर विदेशी प्रभाव :-

- इस कला के तहत बुद्ध की मूर्तियाँ यूनानी देवता [illegible] के समान बनायी गई, जैसे - घुँघराले बाल, प्रभामण्डल आदि है, तथा पैरों में जूते भी पहनाए गए हैं।
- किन्तु यह अंकन ही विदेशी कला का आधार नहीं बन जाता। वस्तुतः गंधार की विषय वस्तु पूर्णतः भारतीय है, रही बात विदेशी प्रभाव पड़ना ~~कहते को~~, — तो यह आपसी संपर्क का परिणाम है। हम कह सकते हैं, कि इस शैली के कलाकारों के पास जाग अधिक बारीकियाँ यूनानियों की है किन्तु हृदय भारतीयों का था।

[illegible] सामासिक का उद्[illegible] है।)

मथुरा शैली

- मथुरा व उसके आस-पास के क्षेत्रों में मूर्ति निर्माण की जिस शैली का विकास हुआ, उसे मथुरा शैली कहते हैं।
- म० क० आदर्शवादी है, व इसमें आध्यात्मिकता की प्रधानता है।
- मूर्तियों का निर्माण - लाल-बलुआ पत्थर से हुआ है।
- बुद्ध का अंकन बाल रहित है अर्थात मुण्डित सिर व दाहिना हाथ अभय मुद्रा में है, व शरीर पर मोटे वस्त्र दर्शाये गये हैं।
- यह मूलतः भारतीय कला मानी जाती है।

अमरावती कला

- कृष्णा-गोदावरी घाटी में अमरा० मूर्ति कला केन्द्र का विकास हुआ। इसी कला को सातवाहन, एवं इक्ष्वाकु शासकों ने संरक्षण दिया। इसमें संगमरमर से मूर्तियों का निर्माण किया गया।
- इसके तहत राजा, राजकुमारों और महलों को भी मूर्तियाँ बनायी गयीं। विषयवस्तु की दृष्टि से इसमें बुद्ध के जीवन एवं जातक कथाओं को भी उभारदार शैली में बनाया गया है। इसका प्रमुख केन्द्र - अमरावती, नागार्जुनीकोण्डा है।

मथुरा शैली

- मथुरा व उसके आस-पास के क्षेत्रों में मूर्ति निर्माण की जिस शैली का विकास हुआ, उसे मथुरा शैली कहते हैं।
- म० क० आदर्शवादी है, व इसमें आध्यात्मिकता की प्रधानता है।
- मूर्तियों का निर्माण - लाल-बलुआ पत्थर से हुआ है।
- बुद्ध का अंकन बाल रहित है अर्थात् मुण्डित सिर व दाहिना हाथ अभय मुद्रा में है, व शरीर पर मोटे वस्त्र दर्शाये गये हैं।
- यह मूलतः भारतीय कला मानी जाती है।

अमरावती कला

- कृष्णा गोदावरी घाटी में अमरा० मूर्ति कला केन्द्र का विकास हुआ। इसी कला को सातवाहन, इक्ष्वाकु शासकों ने संरक्षण दिया। इसमें संगमरमर से मूर्तियों का निर्माण किया गया।
- इसके तहत राजा, राजकुमारों और महलों को भी मूर्तियों बनाया गया। विषयवस्तु की दृष्टि से इसमें बुद्ध के जीवन एवं जातक कथाओं को भी अलंकार शैली में बनाया गया है। इसका प्रमुख केन्द्र - अमरावती, नागार्जुनीकोंडा है।

क्षेत्रीय कशैली (मूर्ति)

(Art) पाल कला

c- पाल मूर्तिकला शैली :- इस शैली के अंतर्गत मुख्य रूप से काँसे एवं पत्थर की मूर्तियाँ बनायी जाती हैं, ये मूर्तियाँ प्रायः साँचे में ढालकर बनायी जाती थी। इन मूर्तियों में बुद्ध, बोधिसत्व, विष्णु, गणेश etc की मूर्तियाँ बनायी गयी हैं। मूर्तियों को आभूषणों से पूरी तरह ढक दिया जाता था। जो कला के कृत्रिम स्वरूप को सूचित करता है।

III) वस्त्र निर्माण शैली :-

1) In Lay तकनीक / जामदानी तकनीक :-

बुने हुए सूती कपड़ों में इस तकनीक के माध्यम से मार्बल डिजाइन बनाया जाता है। बुनकर सफेद पृष्ठभूमि में हल्का रंगीन पैटर्न डालकर साड़ी बनाते हैं। प्रमुख उदाहरण – मणिपुर की मोरांगफी

तमिलनाडु की कोडियल करुपार

2) पैठनी तकनीक :-

महाराष्ट्र के औरंगाबाद के पैठन में सिल्क की बनायी गयी साड़ियाँ प्रमुख हैं। इसके निर्माण में जरी का प्रयोग होता है, अर्थात सोने, चाँदी एवं ताँबे का प्रयोग निर्माण में किया जाता है।

(निर्यात की प्रमुख सामग्री) अजंता की गुफाओं की

निकटता के कारण इस शैली में बौद्ध चित्रकला का प्रभाव देखा जा सकता है। इसमें मुख्यतः हैंस, मोर, कमल के फूल का अंकन मिलता है। प्रमुख उदा० है- उत्तरी की कलमकारी, A.P. की नारायण पेट व तमिलनाडु की कांजीवरम्।

(3) बालूचरी. यह साड़ी बनाने की चीनी तकनीक बनौई पर आधारित है, बंगाल के मुर्शिदाबाद के बालूचर में बुनकरों ने इसे प्रारम्भ किया। इसमें मंदिरों के कथानक को अंकित किया जाता है, अर्थात वस्त्र पर पौराणिक कथानक अंकित रहते हैं, इस दृष्टि से इसे हिन्दू कला का रूप माना जाता है। साड़ी, दुपट्टा, पर्दे व तौलिया आदि में इसका अंकन प्रमुखता से मिलता है।

(4) बांधनी / बांधनी। इस भारतीय शैली में कपड़ों में छोटे बिन्दुओं को रंग धागों से बांध कर रंग दिया जाता है इसमें चमकदार रंगों का प्रयोग होता है, जो मुख्यतः वानस्पतिक रंग होते हैं। राजस्थान, गुजरात में वस्त्र निर्माण की यह प्रमुख शैली है।

(5) छपाई तकनीक :-

↳ बाटिक तकनीक :- यह कपड़ा छपाई की मुख्य तकनीक है, इसमें सांचे वाले लकड़ी के टुकड़ों का प्रयोग वस्त्रागत को बुने हुए रेशमी या सूती कपड़ों पर छपाई हेतु किया जाता है। वैश्विक स्तर पर यह तकनीक सर्वप्रथम

इण्डोनेशिया में शुरू हुई।

तमुरत वस्त्रों के नाम :-

(1) कसूटी :-> यह कनाटक में धागों के प्रयोग से बनाया गया झालरदार वस्त्र है।

(2) कानी :-> यह काश्मीर की पश्मिना शॉल का एक रूप है।

(3) तुसुंगोटेपसु :-> यह नागालैण्ड में सैनिकों के द्वारा उपयोग में लायी जाने वाली शॉल है।

(4) नवलगुण्ड :- तमिलनाडु में रेशम से बनने वाली एक दरी है।

IV) **मृदभाण्ड/निर्माण तकनीक** :-
बर्तन (Pottery)

भारत में मुख्यतः तीन प्रकार के मृदभाण्ड निर्माण तकनीक हैं --

तकनीक
- हाथ → चाकरहित हस्तनिर्माण
- चाक → [illegible] + चाकदार [illegible]

(1) चाकरहित मृदभाण्ड तकनीक :-
यह लोक निर्माण का उदाहरण है, और आरंभिक नवपाषाणिक बस्तियों में इसका निर्माण हुआ है जो बर्तन हाथों से निर्मित होते थे, ये साधारण होते थे।

(2) चाकदार मृद० तक० :-> यह मृदभाण्ड पतली मिट्टी की परत से बने होते थे जो चाक पर बनाये जाते थे। ये काले रंग के होते थे, और इनमें प्रायः चित्रण भी होता था। इस तरह के मृदभाण्ड प्राचीन भारत में NBPW के नाम से जाने जाते थे। ये बर्तन अपेक्षाकृत महंगे थे, और इसलिए समाज में आर्थिक विषमता

को सूचित करते है।

(3) स्कारफिटो तकनीक :-

इसमें काल एवं लाल रंग का मिश्रण बनाकर मृदभाण्ड का निर्माण किया जाता था।

चित्रकला

- रेखांकन
- पुरुष-स्त्री भेद
- रूपभेद की उपस्थिति
- लावण्य

चित्रकला के तत्व :-

1) रूप भेद या आकृति किसी भी कलाकार की कृति उसमें अंकित आकृति को देखकर पहचानी जा सकती है, कलाकृति की रूप रेखा जितनी स्पष्ट होगी वह उतनी ही स्वभाविक होगी, वस्तुतः रेखाओं के माध्यम से रूप भेद को स्पष्ट किया जाता है। भा- चित्रकला को रेखा प्रधान चित्रकला इन्हीं संदर्भों में कहा जाता है। (जैसे कोई चित्र में अगर स्त्री फूल चुनकर जा रही है, तो यह स्पष्ट होना चाहिए कि वह राजकुमारी है, अथवा दासी।)

2) प्रमाण :- वस्तु की विवरणात्मक स्थिति को प्रमाण कहते हैं, इसके माध्यम से हम प्रत्येक चित्र का मान (लम्बाई, चौड़ाई) निर्धारित कर सकते हैं। देवता व मनुष्य के चित्रों की भिन्नता भी समझ सकते हैं।

3) भाव :- कलाकृति की भंगिमा उसके स्वभाव एवं मनोभावों को व्यक्त करती है। ~~भिन्न-2 भावों~~ के अंकन से कलाकृतियों में भिन्न-2 अभिव्यक्तियों का समावेश होता है, जैसे फूलों का खिलना, पलकों को झुकाना, आँखें बड़ी हो जाना etc.

4) लावण्य :- भाव भीतरी सौंदर्य का बोधक है, जब कि ला० बाह्य सौंदर्य का। ला० से चित्रों में सजीवता आती है।

(5) सादृश्य योजना :- किसी रूप के भाव को किसी दूसरे रूप की सहायता से प्रकट करना ही सा॰ यो॰ है। जैसे मुख की चाँद के समान सादृश्य योजना रखी जाती है।

(6) वर्ण योजना / रंग योजना :- विभिन्न रंगों के माध्यम से बने चित्र चित्रकला (विषयवस्तु) को आकर्षक बनाते हैं।

विकास :-

- प्रागैतिहासिक काल :-
  - पुरापाषाण काल — महत्व — as a historical [illegible]
    - निम्न, मध्य, उच्च
  - > अकेले व्यक्ति का नहीं
  - > समूहों का चित्रण

भारत में कला के रूप में चित्रकला का विकास सर्वप्रथम पुरापाषाण काल में हुआ। इस काल की चित्रकला का उदा॰ :- भीमबेटका, आदमगढ़ की गुफाओं में मिलता है। यहाँ के चित्रों से स्पष्ट होता है, कि -
(1) प्रागैतिहासिक चित्रकारों को स्त्री पुरुष का भेद ज्ञात था।
(2) शिकारी जीवन यापन का मुख्य साधन था।
(3) लोग समूह में रह रहे थे, [अनेक]।
(4) शेर, कुत्ता, हाथी आदि पशुओं की जानकारी का पता चलता है।

भीमबेटका की गुफा चित्रकला को राष्ट्रीय महत्व का स्थान घोषित किया गया। यह यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थल की सूची में भी शामिल है।

- सिंधु घाटी सभ्यता / सिंधु सभ्यता कालीन की चित्रकला :-

यहाँ कला के नमूने मुहरों, मृदभांडों पर मिलते हैं, जहाँ फूल पौ[धे], ज्यामितिय प्रतीकों का अंकन है तो साथ ही पशुओं का भी

अंकन मिलता है। इस तरह रेखा प्रधानता चित्रों में मिलती है। मंदिर पर पशुपति का अंकन मिलता है, तो साथ ही मृदभाण्डों पर पंचतंत्र के चालाक लोमड़ी का कथानक भी अंकित है। इस दृष्टि से चित्र धार्मिक व धर्मनिरपेक्ष विषय से युक्त है

जोगीमारा चित्रकला :- छत्तीसगढ़ में जोगीमारा एवं सीताबेंगा नामक गुफाएँ रामगढ़ की पहाड़ियों पर बनी हैं। यहाँ बने चित्र में प्रकृति अर्थात् मछलियों, जीव जन्तुओं व पुरुष का अंकन किया गया है, यहाँ एक हाथी व जुलूस का चित्रांकन भी मिलता है। चित्रों में लाल, काले एवं सफेद रंगों का प्रयोग किया है। नर्तकियों व संगीतज्ञ भी दर्शाये गए हैं। इस तरह यहाँ रेखा प्रधानता, वर्ण योजना, भावाभिव्यक्ति जैसे कला के तत्व मौजूद हैं।

बौद्ध चित्रकला :- यह मुख्य रूप से भित्ति चित्रकला का उदाहरण है, इस कला का मुख्य रूप अजंता की गुफाओं में देखा जा सकता है, जहाँ बुद्ध का जन्म, गृहत्याग, प्रथम उपदेश आदि का अंकन मिलता है।

अजंता की चित्रकला - औरंगाबाद (महा.)

इन गुफाओं में चित्रकला का सुंदर उदाहरण मिलता है, इसमें बने चित्र विभिन्न कालखण्ड के हैं, यही वजह है कि इन चित्रों में विविधता दिखायी देती है।

गुप्तकाल में अजंता चित्रकला और विकसित हुई। यहाँ गुफा संख्या -16 में मरणासन्न राजकुमारी का अंकन है। जिसकी करुणा व वियोग की भावना अत्यंत दर्शनीय है। गुफा

संख्या-17 को चित्रशाला कहा गया है। इसमें बुद्ध द्वारा गृह त्याग, यशोधरा एवं राहुल का अंकन मिलता है।

अजंता चित्रकला मुख्यतः बौद्ध धर्म से जुड़ी हुई है। इसमें चित्रों को बनाने हेतु नई तकनीक फ्रेस्को एवं टेम्परा का प्रयोग किया गया है, जिसके तहत दीवारों पर (गीले प्लास्टर पर चित्र बनाकर रंग भर दिये जाते थे।3

अ० की गुफाओं की दीवारों व छतों पर बनाये गये चित्र जातक कथाओं तथा बोधिसत्व के रूपों को प्रदर्शित करते हैं। इस तरह अजंता के चित्रों में रेखा, प्रमाणता, वर्ण योजना, भाव, अभिव्यक्ति, सादृश्य योजना जैसी एवं लावण्य जैसे चित्र के सभी प्रमुख तत्व मिलते हैं।

(बाघ की चित्रकला :- धार जिला (म.प्र.) में बाघ गुफा की

महायान शाखा से संबंधित चित्रों को प्रदर्शित करती है, तो बाघ की लौकिक कला का उदाहरण को प्रस्तुत करती है। यहाँ के चित्रों में नृत्य संगीत, राजकीय जुलूस, हाथियों की दौड़, शोकाकुल युवतियों का अंकन तथा विभिन्न पशु पक्षियों का अंकन हुआ है।

एलोरा की चित्रकला :-

औरंगाबाद (महाराष्ट्र) — यहाँ पहाड़ को काटकर बनाये गये गुफाओं व मंदिरों में अनेक चित्र

मिलते हैं। इस तरह यह भित्ति चित्र का उदा॰ प्रस्तुत करती है। चित्रों में सामान्य मनुष्य, पेड़-पौधों, पशु-पक्षी का अंकन मिलता है। सफेद पीले, नीले, काले etc. रंगों का प्रयोग।

सित्तनवासल गुफा की चित्रकला :-

तमिलनाडु के पुदुकोट्टई जिले में स्थित, इसमें बने चित्र सिद्ध, शैव, एवं जैन धर्म से जुड़े लोगों (बौद्धों की रुच कारण) की रही है। यहाँ मंदिर की छत पर तालाब में मछली, मगरमच्छ आदि दर्शाये गये हैं। साथ ही राजा-रानी व नर्तकी के चित्र अंकित हैं। यह चित्रकला अजंता शैली से प्रभावित है। 9वीं सदी में पांड्य यहाँ चित्र बनाये गये।

जैन चित्रकला :- इसके नमूने तीन रूप में मिलते हैं,

(1) भित्ति चित्र
(2) ताड़ पत्र पर चित्र (ताड़चित्र)
(3) वस्त्र या कागज पर चित्र

प्रमुख विशेषतायें :-

(1) इसकी सबसे बड़ी विशेषता नेत्र चित्रण में है, यहां के नेत्र लगभग कानों तक फैले हुए हैं।

(२) जैन चित्रकला की पृष्ठभूमि में प्रायः लाल रंग का प्रयोग किया जाता है।
किन्तु ताड़पत्रों पर अंकित चित्रों पर प्रायः पीले रंगों का प्रयोग

(3) चित्रों में तीर्थंकरों के साथ-2 विभिन्न जैन देवियों - चक्रेश्वरी, अम्बिका का अंकन मिलता है।

(4) चेहरे शात शून्य है, ∴ चित्र का अनुमान आकृतियों की मुद्राओं व पास में लिखी गयी कथा से लगता है।

(5) जैन चित्रकला को अपभ्रंश शैली या पुस्तक शैली के नाम से भी जाना जाता है

मध्यकालीन चित्रकला :-

सल्तनत काल में सीमित विकास
bco'z → इस्लाम में निषिद्ध

मुगल चित्रकला :-

अकबर → ईश्वर को जानने का साधन

पुर्नजागरण — यूरोप — मध्यकाल — भारत मुगल
→ थ्री-डी चित्रण
→ व्यक्ति विशेष का } ⟹ यहाँ भी प्रभाव
bco'z व्यापारी यूरोप से आये

मुगल काल में कला में संकीर्णता नहीं — दरबारी चित्रण।
↳ विश्व व्यापी रूप दिखता है।

मुगल चित्रकला

- यूरोपीय + राजपूत + इस्लामिक → अकबर-बु
  ↳ रंग में प्रयुक्त किये जाने वाले ब्रश

मु० कालीन चित्रकला परंपरागत भारतीय चित्रकला, यूरोपीय चि० व ईरानी चित्र० के तत्वों से निर्मित हुई है। इस काल में चित्रकारी भित्ति चित्र के साथ-साथ पाण्डुलिपि चित्रण एवं वस्त्र पर भी देखी जा सकती है।

हुमायूँ के काल में ईरानी चित्रकार ख्वाजा अब्दुल समद ने बाबर के काल पर बाग्गा के खेल का दृश्यों सहित चित्रण किया। वस्तुतः इस काल में मुगल दरबार में जो शैली विकसित हुई। उसे ईरानी कला के तहत् हेरात कलम के नाम से जानते हैं। (अफगानिस्तान में ईरान है हेरात चित्रकार बिहजाद का प्रमुख ~~कार्यस्थल था। इसके~~ तहत दरबारी शानो-शौकत व बादशाहों के आचारों का अंकन किया गया।

अकबर कालीन चित्रकला :- अ के काल में चित्रकला का पर्याप्त विकास हुआ इसके अनुसार चित्रकला ईश्वर की पहचानने का एक साधन है। इस तरह अपने ज्ञान

को बताने का एक सशक्त माध्यम है। A के काल में चित्रों में प्रतिदिन प्रयोग में लाये जाने वाले भारतीय परिधानों, दरबार का चित्रण, प्रकृति (फूल-पत्ती, पशु-पक्षी) का चित्रण मिलता है।

मुगल चित्र० पर राजपूत चित्रकला का प्र०

1. चौड़े ब्रश की जगह गोल ब्रश का प्रयोग प्रारंभ
2. गहरे नीले तथा लाल रंग का अत्यधिक प्रयोग
3. चित्र में उछलते-कूदते गीत गाते पक्षियों का अंकन

यूरोपीय चित्र० का प्रभाव

1. व्यक्ति विशेष का चित्रण – छवि चित्रण
2. दृश्य में आगे दिखने वाली वस्तुओं को छोटे आकार में बनाया।
3. व्यंग्य एवं आलोचना के विषय को चित्रित करना
4. चित्रों को त्रि आयामी बनाना। (जहाँगीर के काल में)

प्रमुख चित्रकार

(A) दसवंत, फारुख, बसावन

दसवंत :- इसने रज्मनामा का चित्रण किया, जो भारतीय पौराणिक ग्रंथ महाभारत की पाण्डुलिपि चित्रण है।

बसावन :- यह व्यंग्य का चित्रकार था। इनकी उत्कृष्ट

खेतों में भटकते हुए दिखाया (यूरोपीय प्रभाव)

→ व्यंग्य की चीज़

∴ इस काल में धर्मेतर एवं लौकिक जीवन केन्द्र में ∴ संभव हुआ।

जहाँगीर कालीन चित्र :-

यह मुगल चित्रकला का स्वर्ण काल माना जाता है, जहाँगीर स्वयं चित्रकला का पारखी था। इसने आकारिजा के नेतृत्व में आगरा में एक चित्रशाला विभाग की स्थापना की।

विशेषताएँ :-

1) चित्रकला में रूपवादी शैली की प्रधानता मिलती है।

2) चित्रों में शिकार तथा युद्ध एवं राजदरबार के दृश्यों का अंकन मिलता है।

(3) चित्रों को यथार्थवादी बनाने का प्रयास

(4) यूरोपीय प्रभाव को पैरत वाले देवदूत तथा मरियम का चित्रण भी हुआ।

(5) छवि चित्रण का भी प्रचलन हुआ।

(6) चित्रकला में मोरक्का (अलंकृत हासिया) शैली का विकास हुआ।

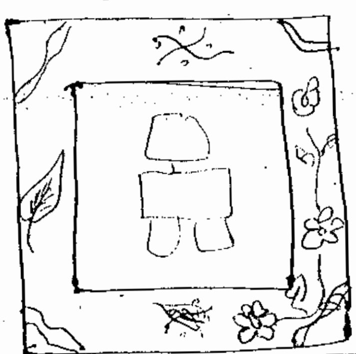

(7) इस काल में छोटे आकार के चित्र भी बने लगे, जिन्हें गले या पगड़ी में लगाया जा सके।

(8) प्रमुख चित्रकार :-

मंसूर :- यह पक्षियों का अंकन करता था।

अबुल हसन :- इसने जहाँगीर की आत्मकथा तुजुक-ए-जहाँगीरी के मुख्य पृष्ठ का चित्रण किया।

बिसनदास :- इसे जहाँगीर ने ~~अपने साथी चित्रकारों~~ ईरानी दरबार में चित्रण हेतु भेजा था।

दौलत :- यह अपने साथी चित्रकारों का चित्र बनाता था, अर्थात् कृति चित्रण का विशेषज्ञ था।

प्रांतीय / क्षेत्रीय चित्रकला :-

(1) दक्खनी चित्र :- दक्कन में बीजापुर के शासक इब्राहिम आदिलशाह के समय चित्रकला का अत्यधिक विकास हुआ। इसके समय "रंगमाला" चित्रकला की परंपरा विकसित हुई। जिसमें बारहमासा का चित्रण किया जाता था, अर्थात् विभिन्न ऋतुओं के माध्यम से भाव एवं विषयवस्तु को दर्शाया जाता था।

~~प्रमुख~~ विशेषताएं :-

(1) चित्रकारों ने आभूषणों का अत्यधिक चित्रण किया, विशेषकर गले के हार का।

(2) फूल-पत्ति का यथार्थ चित्रण किया गया।

(2) राजस्थानी / राजपूत चित्रकला :-

विशेषताएं

(1) प्रकृति का चित्रण, गीत गाते पक्षी, उछलते-कूदते पशु का अंकन किया गया है।

(2), रंगों की बहुलता होती है, व शिकार के दृश्य की

अंकित है।

(3) प्राकृतिक छवियों में काले बादल, बिजली की चमक, और के दृश्यों का चित्रांकन किया गया है।

(4) चित्रकारों ने बाँसुरी वादक कृष्ण, नायक - नायिका, ग्रामीण जीवन तथा पौराणिक कथाओं का चित्रण किया है। इसी तरह संगीत एवं साहित्य दोनों ही चित्रकला के विषय बन गये। वस्तुतः केशव द्वारा रचित रसिकप्रिया में वर्णित नायक - नायिका के कथानक को चित्रों के माध्यम से अंकित करना, जो साथ ही दीपक राग का चित्रण करते हुए चित्रकार को जलते हुए दीप बनाए या फिर मेघ राग का चित्रण हेतु तर्क वस्तुओं का अंकन किया।

(5) राजस्थानी चित्रकला शैली में भक्ति भाव भी स्पष्ट दिखाई देता है। जहाँ कृष्ण भक्ति के चित्र अधिक बनाए गए।

(6) बाध्याकरण के साथ-2 विभिन्न दस्तकारी समूह जैसे बढ़ई - ग्वाला, जुलाहा आदि का भी अंकन मिलता है। इस तरह धार्मिक नायक का मानवीकरण व मानव का सामान्यीकरण किया गया। (नायक के इर्द - गिर्द)

(कृष्ण का मानव रूप में अंकन)

विभिन्न रूप :-

(1) मेवाड़ कला :- यह राजस्थानी कला शैली का प्राचीनतम केन्द्र है, इसके चित्र प्राय: कृष्ण भक्ति विषय, वैष्णव धर्म से संबंधित है, इसमें लोक संस्कृति का चित्रण, विवाह एवं नृत्य गान का चित्रण प्राप्त होता है। स्त्री आकृतियाँ अपेक्षाकृत कम ऊँचाई की हैं।

मेवाड़ का सिसारहीन घराना इस चित्रकला का प्रमुख संरक्षण करता है।

(2) किशनगढ़ शैली :- राधा कृष्ण तथा कृष्ण की विभिन्न लीलाओं का चित्रण इसमें मिलता है। महाराजा सावंत सिंह इसके संरक्षक थे।

इस शैली के अंतर्गत "बणी-ठणी" नामक कृति बनायी गयी। जिसे निहाल चंद ने बनाया। किशनगढ़ शैली में मोतियों एवं हीरों के आभूषण का चित्रण किया गया है। इसमें नारी आकृति लम्बी बनायी गयी है।

(3) बूंदी शैली :- इसमें मुख्यत: स्त्री आकृतियाँ लम्बी एवं दुबली-पतली, नोकदार नासिका, शरीर का रंग हल्का बादामी दर्शाया गया है।

(4) कोटा शैली :- इसमें मुख्यत: शिकार के दृश्य बनाये गये हैं, राजा उम्मेदसिंह ने इसे संरक्षण

दिया।

पहाड़ी शैली :-

पहाड़ी चित्र कला :-

विकास - 18वीं सदी से संबंधित

मुगल ↓ ⇒ अंग्रेज ↑ ⇒ स्थानीय शासन ↓

- राजपूत वाले प्रकृति के विषय
- कथानक पौराणिक

पहाड़ों ने कलाकारों को शरण

पहाड़ी कला < राजपूत + स्थानीय / मुगल + स्थानीय

पंजाब की पहाड़ी रियासतों में राजपूत चित्रकला की शैली अपने नये रूप में प्रकट हुई व पहाड़ी कलम के नाम से जानी गयी। वस्तुतः नादिरशाह एवं अब्दाली के आक्रमण के पश्चात् मुगल एवं क्षेत्रिय चित्रकारों ने पहाड़ों में शरण ली। और फिर कांगड़ा, बसोली, गुलेर, कला के प्रमुख केन्द्र के रूप में उभरे।

कांगड़ा कलम :- कां० रियासत में महाराजा संसार चंद के समय चित्र० का पर्याप्त विकास हुआ। इस कला के मूल में राजपूत शैली की भूमिका देखी जा सकती है।

चित्रों में प्रमुखता से पौराणिक कथानक एवं नायक - नायिका का अंकन मिलता है, साथ ही व्यक्ति चित्र भी मिलते हैं। मुख्य रूप से प्रभावशाली आकृतियाँ स्त्रियों की हैं। इनमें आँखें धनुषाकार और अँगुलियों में लय तथा नजाकत दर्शायी गयी है। प्राकृतिक दृश्यों में रंग - बिरंगे फूल, पृथ्वी

एवं आकाश को मिला देने वाली मेघमालाएँ, हाथी, वीर एवं पहाड़ियों का अंकन प्राप्त होता है।

बसोली कलम :- जम्मू क्षेत्र में स्थित बसोली क्षेत्र में विकसित यह पहाड़ी कलम का एक उदा० है।

कांगड़ा शैली की अपेक्षा इसमें अधिक रंगीन चित्र बने, ब० शैली में मुख्यतः नेत्र चित्रण पर विशेष बल दिया गया। साथ ही इस शै० में हस्त मुद्राओं का आकर्षक चित्रण मिलता है।

कंपनी शैली / पटना कलम / पटना चित्रकला → लोक कला का रूप

EIC के शासन में राजनीतिक शक्ति प्राप्त करने के साथ ही पटना कला शैली का विकास हुआ। जो 18वीं से 20वीं सदी का काल माना जाता है।

इस शै० में कलाकार यूरोपिय, मुगल एवं पहाड़ी कला से परिचित थे, इस तरह इसमें यूरोपिय तत्वों और स्थानीय परंपराओं का मिश्रण प्राप्त होता है। यह शैली बिना किसी राजाश्रय के विकसित हुई। इसके संरक्षक एवं खरीददार तत्कालिन धनी व्यापारी एवं ब्रिटिश कला प्रेमी थे।

पटना कलम में चित्र कागज एवं हाथी दांत पर बनाये गये। इन की विषय वस्तु राजकला ना होकर लोक कला थी। चित्रों में श्रमिक दस्तकार वर्ग बाजार के दृश्य, त्योहार, पाठशाला का चित्र आदि का अंकन मिलता है। चित्रों में विशेष रूप से चिड़ियों का अंकन मिलता है।

प्रमुख चित्रकार :- यमुना प्रसाद - जिनकी प्रमुख कृति है,

मधुबनी चित्रकला → रंगोली से संबंधित

अरिपन

भूमिचित्र, पट्टचित्र, भित्तिचित्र (घरों की दिवारों पर — कोहबर

प्राकृतिक रंग use

भाग - रति संबंधित अंकन

बाहर - भितर की अंकन

for sale

पट्टचित्र — ताँबे का use

हाथ से ही मधुबनी चित्र० बिहार की संस्कृति को प्रकर्षित करती है। यह मिथिलांचल क्षेत्र जैसे - मधुबनी, दरभंगा, सहरसा आदि जिलों की लोक जीवन की कला है, और इसे अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त है, यह तीन प्रकार की होती है :-

(1) भित्ति चित्र :- इसके तहत घर की सजावट धार्मिक चित्रों के माध्यम से की जाती है। इनमें राधा - कृष्ण, पार्वति - शिव, लक्ष्मी - विष्णु का अंकन मुख्यत: होता है। भि० चि० घर के अंदर की कमरे (कोहबर) में कमरों की दिवारों तथा उसके कोनों पर अंकित होती है। यह पशु पक्षी के चित्र भी होते हैं, जिनका प्रतिकात्मक अर्थ है, इ० => सिंह => शक्ति, घोड़ी, हाथी => ऐश्वर्य, सूर्य-चन्द्र => दीर्घायु जीवन के प्रतीक है।

(2) अरिपन / भूमि चित्र :- यह महिलाओं के द्वारा घर के आँगन या चौखट के सामने बनाया जाता है। इसमें पिसे हुए चावल, पानी तथा विभिन्न रंगों को मिलाकर चित्र बनाया जाता है। इसमें मनुष्य पशु - पक्षी, पेड़ - पौधे, देवी - देवता तथा दीपक के चित्र बनाये जाते हैं।

(3) पट्ट चित्र / → यह वस्त्रों पर निर्मित। इसमें किसी व्यक्ति

का चित्र उसके शारीरिक सौंदर्य पर ध्यान देने की बजाय, महज उसके भेद को अंकित करने के काम किया जाता है। चित्र मुख्यतः अँगुलियों से बाँस की बनी तूलिका से बनाये जाते हैं। मुख्यतः प्राकृतिक रंगों का प्रयोग होता है।

मंजूषा कला : यह भागलपुर की लोक कथाओं में प्रचलित बिहुला-बिषहरी के कथानक पर आधारित है। इसमें मुख्यतः नाग के चित्र बनाए जाते हैं। इस चित्र की खास विशेषता इसमें स्त्री-पुरुष के चेहरे का सिर्फ बायाँ भाग ही दर्शाया जाता है।

आधुनिक चित्रकला / बंगाल कला केन्द्र — आरंभ - कंपनी शासन के दौरान

(शिल्पतरु → अंग्रेजी, भारतीय)

कंपनी शासन की स्थापना के साथ ही चित्रकला के नवीन केन्द्र के रूप में बंगाल कला केन्द्र की स्थापना हुई। बंगाल स्कूल को आरंभ करने का श्रेय ई. बी. हैवेल को दिया जाता है, यह कलकत्ता कला विद्यालय के प्राचार्य थे। इनकी प्रेरणा से अवनीन्द्रनाथ ठाकुर ने कला का विकास किया। अवनीन्द्रनाथ ने पाश्चात्य और स्वदेशी मुगल एवं अजंता चित्रकला का मिश्रण करके एक नयी शैली शुरू की, जिसे बंगाल शैली / ठाकुर शैली कहते हैं। इसमें इन्होंने पाश्चात्य तकनीक और स्वदेशी विषयवस्तु को लेकर चित्रण किया।

इनके शिष्य नन्दलाल बोस एक राष्ट्रवादी चित्रकार थे। इन्होंने प्राचीन विषय को चित्रकला

का आधार बनाया।

बंगाल कला के प्रमुख चित्रकार

जैमिनी राय थे, इन्होंने Oil painting को

अपनाया और सादी पृष्ठभूमि पर कम रेखाओं

का प्रयोग किया।

अमृता शेरगील है इन्होने Oil पेंटिंग के माध्यम से

आधुनिक संवेदना को चित्रित किया। विशेषकर पंजाबी

कृषक महिलाओं की समस्याओं का चित्रण किया।

नृत्यकला

शास्त्रीय
- नृत्य की परंपरा + वेशभूषा + कथानक

लोक
- कोई निश्चित नियम नहीं

नृत्य
- तांडव → पुरुष → शिव
- लास्य → महिला
- लास्य → (पार्वती) शिव को रिझाने हेतु ⟹ मध्य/विकास ⟹ लास्य

✓ नृत्य का मूल ढांचा इन्हीं से प्रारंभ

✓ नृत्य का संबंध धर्म से

✓ देवदासी

ये पौराणिक कथाओं में शिव - पार्वती के नृत्य से जोड़े जाते हैं। (1) ताण्डव का एक रूप उग्र नृत्य का रूप है। इसे करने वाले शिव रुद्र कहे जाते हैं। जबकि ताण्डव का दूसरा रूप आनंद प्रदान करने वाला और इसे करने वाले शिव नटराज के रूप में जाने जाते हैं। इस तरह ताण्डव से सृष्टि के उत्थान व पतन दोनों को जोड़ा जाता है।

लास्य नृत्य सुकुमार एवं कोमल नृत्य के रूप में स्त्री / पार्वती के माध्यम से दर्शाया जाता है।

<u>नटराज शिव</u> :- भारतीय संस्कृति के <u>धर्मशास्त्र व कला की त्रिवेणी</u> है। प्राचीन काल में शिव की वंदना अनेक रूप में की गयी। नटराज की मुद्रा में चार भुजाएं हैं। चारों ओर अग्नि के घेरे हैं, एक पाँव से बौने को दबाए हुए हैं, तो दूसरा पाँव नृत्य की मुद्रा में ऊपर उठा है। अपने पहले ऊपर उठे हुए हाथ में डमरू पकड़ा हुआ है, जो ध्वनि सृजन का प्रतीक है। दो

एक अन्य हाथ - अभय मुद्रा में उठा है, जो बुराइयों से रक्षा करता है।

नटराज की इस मूर्ति में सृजक (बनाने वाला), संहारक (मारने वाला), दाहक (जलाने वाला) तथा संजीव (जीवन देने वाला) रूप मिलता है। नटराज के इस नृत्य को 'नदान्त नृत्य' की संज्ञा दी गई है। इसमें सृष्टि, प्रलय, तिरोभाव तथा अनुग्रह शामिल हैं। सबसे पहले स्वर माला की उत्पत्ति शिव के डमरू से निकले नाद से मानी जाती है। नटराज के हाथ में अग्नि का तात्पर्य — मन की बुराईयों को दूर करने हेतु संकल्प रूपी आग को हमेशा जलाकर रखना चाहिए। यह आग (संकल्प) सभी बुराईयों को दूर करके अच्छाईयों को अंदर लाने का कार्य करती है। इस तरह यह शिक्षक की भूमिका में पांव के नीचे कुचला हुआ बौना दानव अज्ञान का प्रतीक है, जो शिव द्वारा नष्ट किया जाता है। इस तरह शिव अज्ञान का विनाश करते हैं।

भारतीय शास्त्रीय नृत्य :-

(1) भरतनाट्यम :- यह तमिल संस्कृति का नृत्य है, और एकल नृत्य है, यह मंदिर की नर्तकियों या देवदासियों द्वारा भगवान की मूर्ती के समक्ष किया जाता था।

आरंभ में देवदासी नृत्य से संबंधित होने के कारण इसे सम्मान की नजर से नहीं

देखा गया। किन्तु २०वीं सदी में रुक्मणी देवी के प्रयासों से इसे पर्याप्त सम्मान मिला।

इस नृत्य के दो भेद होते हैं -(१) नृत्य (२) अभिनय। नृत्य में मुख्यतः शारिरिक भंगिमा पर विशेष बल दिया जाता है। नृत्य का आरंभ 'अलारिपु (स्तुति)' व अंत 'तिल्लाना' से होता है।

कुचिपुड़ी :- यह शास्त्रीय नृत्य आंध्र प्रदेश के कुचेलपुरम नामक ग्राम के नाम पर कुचिपुड़ी कहलाया। यह गीत एवं नृत्य का समन्वित रूप है। भागवत पुराण इसका मुख्य आधार है, और इसके पात्र भागवत मेला कहलाते हैं।

इस नृत्य में पद संचालन एवं हस्त मुद्राओं का विशेष महत्व है, इस नृत्य की खास विशेषता पीतल के थाल पर नर्तकियों द्वारा नृत्य किया जाता है।

प्रमुख कलाकार - यामिनी कृष्ण मूर्ति

ओड़िसी :- यह शास्त्रीय नृत्य उड़ीसा में प्रचलित है। जो भगवान जगन्नाथ को समर्पित है। प्रमुख कलाकार हैं- संयुक्ता पाणिग्रही, इंद्राणी रहमान।

मोहिनीअट्टम :- यह केरल का प्रमुख नृत्य है, और महिलाएँ इसका एकल प्रदर्शन करती हैं। 19वीं सदी में त्रावणकोर के राजा महाराजा स्वाति तिरुनल के काल में इस कला का विकास हुआ। माना जाता है, कि भस्मासुर वध हेतु विष्णु द्वारा मोहिनी रूप धारण करने की कथा से

मोहिनीअट्टम में भरतनाट्यम तथा कथकली दोनों का अंश पाया जाता है। भरतनाट्यम की श्रृंगारिकता व कथकली की वीरता भाव इसमें मिलता है।

प्रमुख कलाकार :- कल्याणी अम्मा, वैजयंती माला, हेमा मालिनी।

कथकली :- इस शैली के प्रेरणास्त्रोत केरल के स्थानिय लोक नाटक कुडियट्टनम तथा कृष्णाअट्टम रहे हैं। इसमें पौराणिक कथानकों को शामिल किया गया है। यह मुख्यतः पुरुष नृत्य होता था, अतः स्त्री पात्र का नृत्य भी पुरुष ही करते थे। किन्तु रागिनी देवी ने पुरुषों के इस एकाधिकार को तोड़ा।

इसमें नेत्र एवं भौहों का संचालन सबसे महत्वपूर्ण होता है। नृत्य में दो प्रकार के पात्र होते हैं, ये पात्र 'पाचा' (नायक) व 'केटी' (खलनायक) कहलाते हैं।

इस नृत्य मे नर्तक के चेहरे पर लाल एवं हरा रंग लगा होता है, जो अलग-2 चरित्र का सूचक है। हरा (पाचा) ⇒ सद्गुण, स्थिर व मर्यादा का जबकि लाल (केटी) ⇒ पाप का सूचक है। इस तरह यह नृत्य अच्छाई एवं बुराई के बीच चलने वाले संघर्ष को व्यक्त करता है।

यह नृत्य विशेष रूप से ताण्डव नृत्य का रूप है।

और कर्नाटक क्षेत्र में प्रचलित है।

<u>मणिपुरी नृत्य</u> :- यह पूर्वी बंगाल, असम की नृत्य शैली है। जिसका पूर्वोत्तर प्रांतों में भी प्रसार हुआ। मणिपुर में विशेष लोकप्रिय होने के कारण इसे मणिपुरी नृत्य कहा जाता है। ~~इसमें~~ इसमें भक्ति पर अत्यधिक बल है। इसमें ताण्डव एवं लास्य दोनों का समावेश होता है। इस नृत्य की आत्मा ढोल है। इसमें मुद्राओं का सीमित प्रयोग होता है, व नर्तक घुंघरू नहीं बाँधते यह सामूहिक नृत्य है।

प्रमुख कलाकार :- झावेरी बहनें।

मणि० ताण्डव नृत्य की तीन प्रकार की शैली हैं :- (1.) जगोई ताण्डव – नर्तक कंधे (भारतीय ...) झुक कर चक्कर लगाकर नृत्य करता है, यह कृष्ण द्वारा अपनी सखाओं के साथ नृत्य करने पर आधारित है।

(2.) चोलम ताण्डव :- इसके तहत खरताल (ढोल) का प्रयोग किया जाता है। इसमें झुक कर नृत्य करने की शैली है।

(3) थांगता नृत्य :- इसमें ... सैनिक युद्धों को प्रदर्शित किया जाता है।

कत्थक :- यह शास्त्रीय नृत्य U.P की ब्रज भूमि की रासलीला परंपरा से जुड़ा है। इस तरह नृत्य के केन्द्र में राधा - कृष्ण की अवधारणा मौजूद है।

कत्थक नृत्य को शिखर पर पहुँचाने का श्रेय अवध के नवाब वाजिद अली शाह को दिया जाता है। इनके समय ठाकुर प्रसाद अच्छा नृतक है, जिसने नवाब को नृत्य सिखाया।

कथक नृत्य का संबंध विभिन्न घरानों जैसे ग्वालियर, किराना, बनारस आदि से जोड़ा जाता है।

संगीत

स्वर/सुर

सा, रे

राग → सुर जब एक साथ लयबद्ध हो जाये

सारेगामा - - - - -

स्वरों को एक साथ use

सम्पूर्ण

5 स्वर   6 स्वर   7 स्वर

राग + ताल का

ख्याल → शुद्ध स्वरों के माध्यम

ध्रुपद
(i)
हो गए

स्वर — सात सुर माने गये हैं।
राग — सुर/स्वर को एक साथ मिलाकर उच्चारित करना, राग कहलाता है। इस आधार पर राग के तीन रूप माने गये हैं।

राग

	औड़व राग	षाड़व	सम्पूर्ण
स्वर	5	6	7

गायन शैलियाँ

(1) **ध्रुपद** :- यह गायन की प्राचीनतम शैली है, इसका विकास उत्तर भारत में 15वीं व 16वीं सदी में मुगल सम्राट अकबर व ग्वालियर के राजा मानसिंह के समय हुआ।

ध्रु॰ गायन में भक्ति का तत्व शामिल है।

इसमें स्वर ताल का समन्वित रूप मिलता है। इसमें 'अलाप' शुद्ध स्वरों की बढ़त को दर्शाता है।

इसमें ओंकार का स्मरण करते हुए गायन किया जाता है, प्रमुख गायक- तानसेन, बैजू बावरा।

ख्याल :- इसका विकास अमीर खुसरो तथा जौनपुर के शर्की वंश से जोड़ा जाता है। इस गायन में विभिन्न घरानों की अवधारणा विकसित हुई।

ख्याल में ठुमरी गायन का विकास हुआ। इसने संगीत की काव्यमय अनुभूतियों को सरल बनाया। और इसने रागों के कठोरतम बंधन से मुक्त किया। लखनऊ से इसका विकास माना जाता है।

टप्पा :- यह ठुमरी का ही इतरा रूप है। पंजाब के शोरी मियाँ इसके जनक माने जाते हैं।

कर्नाटक शैली :- 15वीं सदी में इसका विकास हुआ। इसमें रागम, तानम व पल्लवी प्रयुक्त होते हैं।

(रागम ↓ आलाप की तरह, तानम ↓ लय, पल्लवी ↓ स्वर)

कर्नाटक संगीत के तीन रत्न - त्यागराज, मुथुस्वामी व श्यामा शास्त्री।

(रंगमंच) ⟹ नाट्य विषय का अभिनय

लोक नाट्य मंच ⇓ परंपरागत

राजाश्रय नाट्य ⇓ मिश्रण

नाटक/रंगमंच

सुखांत

दुखांत (यूनानी परंपरा में यह चीज imp)

पुतली → धागे, दस्ताने

रंगमंच नौटंकी या संगीतमय लोकमंच का रूप है, जो मुख्यतः U.P. में लोकप्रिय है। इसके संवाद पद्य में बोले जाते हैं। इसमें वीरता एवं प्रेम के नाटक खेले जाते हैं।

स्वांग :- यह लोकनाट्य का रूप है, जो U.P., M.P., राजस्थान में प्रचलित है। इसमें महिला एवं पुरुष दोनों के अभिनय को पुरुष द्वारा निभाया जाता है।

माच :- M.P. का पारंपरिक नाट्य मंच है, इसमें पौराणिक कथाओं, प्रेम प्रसंगों तथा हास्य व्यंग को शामिल किया जाता है। ये हास्य व्यंग अश्लील एवं फूहड़पन के स्तर पर पहुँच जाते हैं। अतः इसमें बच्चों एवं महिलाओं का प्रवेश प्रायः वर्जित रहता है।

ललित :- यह मराठवाड़ा क्षेत्र का प्रमुख रंगमंच है, इसमें मंदिर में देवता का वार्षिक अनुष्ठान प्रदर्शित किया जाता है।

यात्रा :- यह बंगाल एवं उड़ीसा में वैष्णव लोगों के चैतन्य सम्प्रदाय से जुड़ा रंगमंच है, अर्थात यह कृष्ण कीर्तन से संबंधित है। राष्ट्रीय आंदोलन के

दौरान सामाजिक बुराइयों को दूर करने की दृष्टि से इसमें सामा० विषयों को शामिल किया है।

सांग – हरियाणा में लोकप्रिय। इसमें बाहर खुले स्थानों पर लोगों बीच बैठते हैं, व चारों तरफ स्रोता एवं दर्शक होते हैं।

करियाला – यह हिमाचल प्रदेश का लोक नाट्य है, इसमें जीवन एवं मृत्यु के गंभीर प्रश्नों को उठाया जाता है।

भांड पाथेर – यह कश्मीर का एक प्रहसन (हास्य/व्यंग) रंगमंच है समाज की बुराईयों पर व्यंग करने का सशक्त माध्यम है।

तमाशा – यह महाराष्ट्र का रंगमंच रूप है, इसमें नृत्य, संगीत के माध्यम से नाट्य रूप प्रस्तुत किया जाता है। इस रंगमंच का प्रयोग राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान स्वदेशी आंदोलन के क्रम में लोगों को संगठित करने हेतु किया।

मुडियेट्टू (मुडियेट्टु) – यह केरल का आनुष्ठानिक नृत्य नाटक है, व गर्मियों में फसल कटने के पश्चात इसको खेला जाता है। (2010 की यूनेस्को सूची में इसको शामिल किया गया)

कुडियट्टम :- यह केरल का नाट्य रूप है, इसमें भाव भंगिमा का खूब प्रयोग होता है। एक शब्द की व्याख्या अंग संचालन से की जाती है।

थेय्यम :- यह केरल का पूजा/धर्म पर आधारित पारंपरिक रंगमंच है, इसमें वेशभूषा अत्यंत आकर्षक होती है।

अंकियानाट :- यह असम का नाट्य रूप है, इसे किसी बड़े भवन या खुले स्थानों पर बने पण्डालों में आयोजित किया जाता है। इसमें गीत भी गाये जाते हैं। तथा रंगे हुए मुखौटों का प्रयोग भी किया जाता है। असम के शंकरदेव इस नाट्य परंपरा से जुड़े हुए

कठपुतली :- यह किसी स्थान विशेष की किंवदंती, वेशभूषा, अलंकारिक कलाओं व पारंपरिक गाथाओं को प्रदर्शित करने वाली लोककला है।

राजस्थान का कठपुतली मिश्रधातुओं को बांधकर प्रस्तुत किया जाता है। जैसे उड़ीसा में [illegible] सारवी कुंदेई, महाराष्ट्र में मालासूत्री, कर्नाटक में गोम्बयेट्टा, तमिलनाडु में बोम्मलट्टम कहते हैं।

केरल में पावै कथकली एक कठपुतली नृत्य है, इसे दस्ताने वाली कठपुतली के रूप में प्रस्तुत

किया जाता है।

अंकिया नाट :- असम के वैष्णवी संप्रदाय के लोगों का नाट्य मंच है।

भाण्ड पथेर :- यह कश्मीर का पारंपरिक नाट्य रूप है, इसमें गीत-संगीत, व्यंग्य एवं हाजिरजवाबी को अपनाया जाता है।

आठवीं अनुसूची में वर्ही शामिल → जिसका साहित्य उपलब्ध है।

साहित्य

Common
साहित्य चाहे कोई भी हो निम्न formed
(1) भाषा → classical / जनसाधारण
(2) विषय – गद्यात्मक / पद्यात्मक
(3) शैली / विधा
(4) प्रकार – यात्रावृतांत, आलोचना, रचनात्मक, नाटक
दरबारी प्रेरणा
(5) महत्व
(Maxcep. comi)

(1) वैदिक साहित्य → संस्कृत → श्लोक
मन्त्रणा, Question by ईश्वर
भारत का प्राचीनतम साहित्य

जैन बौद्ध व अन्य → known as ना स्तिक
bcoz ये ईश्वर / वेदों की सत्ता को नहीं स्वीकारते है।

(मध्यकाल में दरबार आधारित)

वैदिक साहित्य :– भारत का प्राचीनतम साहित्य माना जाता है, जिसकी रचना आर्यों ने की थी। यह संस्कृत भाषा में श्लोक में लिखा गया है। इसके तहत चार वेद उनसे संबंधित ब्राह्मण ग्रंथ, आरण्यक, उपनिषद शामिल है।

ब्राह्मण ग्रंथ ⇒ वेदों की अनुष्ठानिक व्याख्या करने वाले ग्रंथ

आरण्यक :– " " गूढ़ व रहस्यात्मक व्याख्या करते

उपनिषद :– " " की दार्शनिक व्याख्या करते है।
(आत्मा, जीव, ब्रह्म)

ये वैदिक साहित्य आर्यों की सामाजिक राजनीतिक – धार्मिक और आर्थिक दशा पर प्रकाश डालते है।

संगम साहित्य (तमिल साहित्य) है

विद्वानों का मिलन / बैठक -

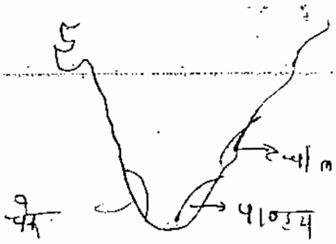

संगम का तात्पर्य है, तमिल कवियों की बैठक और इसमें संकलित किये गये साहित्य को संगम साहित्य कहा जाता है। संगम साहित्य से हमें दक्षिण भारत के चोल - चेर - पाण्ड्य राज्यों की जानकारी मिलती है।

विषय के आधार पर संगम साहित्य के दो भाग हैं, (1) अगम (2) पुरम

अगम → प्रेम संबंधी रचना

पुरम → राजा की प्रशंसा संबंधी रचना

तमिल साहित्य का सुंदर उदाहरण उनके महाकाव्य में मिलता है, जो हैं - शिलप्पादिकारम् - इलांगो आदिकल रचनाकार; मणिमेखलै → सीतलै सत्तनार; जीवक चिंतामणि → तिरुक्कतेवर

पायल - नूपुर की कहानी

शिलप्पादिकारम् को तमिल जनता का राष्ट्रीय काव्य कहा जाता है। बौद्ध धर्म का प्रभाव

कोवलन + कण्णगी की कहानी से संबंधित, माधवी => नर्तकी

इस ग्रंथ में उल्लिखित कण्णगी पूजा तमिल राज्य में पुरुष प्रधान समाज की मनोवृत्ति को दर्शाती है।

नयनार - अलवार संत

7वीं - 8वीं सदी में शैव (नयनार) एवं वैष्णव (अलवार) भक्ति संतों ने तमिल भाषा में भक्ति गीत "तेवारम" की रचना की। प्रमुख शैव संत थे - सांबदर, जबकि अलवारों में एक मात्र महिला संत अण्डाल थी।

9वीं सदी में चोल दरबार में कंबन ने तमिल रामायण की रचना की।

20वीं सदी में राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान सुब्रमण्यम भारती ने तमिल भाषा में कविताएँ लिखकर राष्ट्रवादी भावना को प्रेरित किया।

तेलगू साहित्य

विजयनगर इसका प्रारंभ 11वीं सदी में दिखाई देता है, जब नन्नाया ने तेलगू महाभारत की रचना की। 16वीं सदी में विजयनगर साम्राज्य में कृष्ण देवराय का काल तेलगू साहित्य का स्वर्ण काल कहलाता है। कृष्णदेव ने स्वयं तेलगू भाषा में आमुक्त- ~~आम माल्यद नामक~~ ग्रंथ लिखा जो राजनीतिक - प्रशासनिक विचारों से संबंधित है। इसके दरबार में तेलगु भाषा के आठ महाकवि रहते थे, जिन्हें अष्टदिग्गज कहा जाता है। इनमें सर्वप्रमुख थे - अल्लसानी पेद्दन्न जिन्होंने मनुचरित की रचना की। इन्हें ही तेलगू कविता का पितामह कहा जाता है।

तेनाली रामकृष्ण अष्टदिग्गज में कवि थे, इन्होंने पाण्डुरंग महात्म्य ग्रंथ लिखा।

उर्दू साहित्य :-

उर्दू का शाब्दिक अर्थ है, शिविर, इस भाषा का विकास सैन्य छावनी एवं शिविरों में हुआ। इसके विकास में हिन्दवी, तुर्की, फारसी भाषा की भूमिका रही। यह हिन्दू इस्लामी संस्कृति का सामासिक भाषायी विकास सूचित करता है। आधुनिक काल में फिराक गोरखपुरी (रघुपति सहाय) प्रमुख उर्दू शायर रहे। इन्हें अपनी रचना गुल - ए - नगमा हेतु ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुआ था।

असमी :-

13वीं सदी से असमी भाषा - साहित्य का विकास देखा जा सकता है। इस काल में रुद्र कंदली ने महाभारत के द्रोण पर्व का अनुवाद किया। माधव कंदली ने रामायण का असमी भाषा में अनुवाद किया।

महान संत कवि शंकर देव ने असमी भाषा में गीत लिखे और गीतों वाले कई नाटक भी लिखे, जिन्हें अंकियानट कहा जाता है।

आधुनिक असमी साहित्य को कुंवरी कुरजी के नाम से जाना जाता है।

संस्कृति से सरकार का संबंध

भारतीय सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने में सरकारों की भूमिका रही है। समय-समय पर अनेक राजा/रानाओं ने कलाओं को संरक्षण देकर विरासत को बनाये रखा, तो आगे चलकर औपनिवेशिक शासन ने कंपनी की सरकार ने इस दिशा में कार्य किया, फिर लोकतांत्रिक भारत की सरकार ने आरंभ से ही विरासत के संरक्षण हेतु अनेक संस्थाओं का निर्माण कर सराहनीय कार्य किया है।

(1) भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग (1861) :- यह बड़े पैमाने पर ऐतिहासिक एवं अन्य स्थानों के अन्वेषण / खोज एवं उत्खनन संबंधी कार्यक्रम चलाता है। साथ ही यह कलाओं के सर्वेक्षण स्मारक के आस-पास प्राकृतिक सौंदर्यीकरण, उनका संरक्षण एवं रासायनिक बचाव तथा पुरातत्व स्थान के पास बने पुरातत्वीय संग्रहालयों का रख रखाव करता है।

जिन स्मारकों का रासायनिक संरक्षण किया है, उनमें प्रमुख हैं - अमृतसर का अमृतेश्वर तथा मंदिर, कर्नाटक का महादेश्वर मंदिर व तमिलनाडु में महाबलिपुरम का तट शोर मंदिर।

ए.ड्र. विरासत को भारत के ...

चित्रों को फाड़कर वलासा व बोधहार प्लास्टिक की मदद से नवीनीकृत किया है।

पुरातत्व के संरक्षण हेतु नियम बनाये हैं, कि कोई 100 वर्ष पुरानी वस्तु (पाण्डुलिपि की दशा में 75 वर्ष) जिससे पुरातात्विक या कलात्मक अभिरुचि जुड़ी है, बिना भारतीय पुरातत्व विभाग की अनुमति के निर्यात नहीं की जा सकती है।

(2) साहित्य अकादमी (1954)

(3) संगीत नाटक अकादमी (1953)

(4) ललित कला " (

} ← see from notes